

% परापुराया भाषा क्ष

का माहासम्, कर्न विच्छा, वेहेट घट होनेवाडी ए भीर राजाको धः माहास्य, क्षीनसङ्ख्य कर वचन जन्मावसी जोर एकदर्श का सहस्रम्य कारि अनेक विच्चों का वर्षन किया तथा है।

> उच्चरवदेशान्तर्गर तस्त्रीचरवर्ग पण्डित समविहासीसक्त

leation in, galitic gr

(net ax)

AAAAA \AAA

' प्रकट हो कि इस सवड में वैच्चवों केलक्षण, भगवान के संदिर लीपने का माहातम्य दीप-दान ध्योर जयन्ती-वत का माहातम्य क्रमे-विपाक. बैक्टर प्राप्त होनेवाली परव, श्रीराध्यप्रमी क माहण्य समद्र मथने का उच्चोच, और समद्र का मथन, लक्ष्मीओं के बहस्वति के वर्तो कावर्शन आदासका पालन, मगवान की जन्माएमीका बत बारावा और एकारती का मातालय भागवान के ती कोंडी देने का माहात्म्य और भगवान के चरकोदक का माहात्म्य. क्कों के प्राथिवतों का क्रीन, बिहा और मत्र के जा लेने और म-देशके स्पर्शकादि पापकर्गोका आयश्चित्त, राज कौर कच्चाजी की पाता का भाषात्म्य, कासिक महीने की विधि व्योग नियमों का वर्णन.

बॉबनेवाले के पंजन जादि का फल, प्रतिक्षा के पानने और न पा-सने के दोशों का दर्शन इत्यादि विषय मनोहर नापा में वार्शित है। जिसको बाबू प्रयागनारायकर्ता की व्यक्तानुसार उद्यामप्रदेशां-तारगांवभिवासी पश्डित समीवहारी सकुत ने भगवडकां उपहार के लिये संस्कृत से प्रत्यक्षर का भाषानुवाद कियाहै और उत्तम ब्यवरों में सकेंद्र कायज पर जापा गया है। यह पुराख पेसा उत्तम है कि इसमें कोई क्या पेसी नहीं है, जो इसमें न हो। फीर दूसरे पुराश में विध्यमान हो इससे यह पुराश प्रत्येक मानवहरू के अर में रहना चाहिये। च्याशा है, इसके नैसकर मानवहरू भावत प्रसन्न होस्त प्रसन्नतापुर्वेह प्रहेश करेंगे और बन्त्रालयाध्यक्ष को धनपवाद देंगे।

मेन्द्रेतर-नवलकिशोर-पेस (वुकटियो)

पद्मपराण भाषा के जहातरह का सचीपज। TOTAL a description record up and or - marry it dilty it all all an ar A Apart W. Higgspafe

and former are mine a finder vom filderrift vom met melen and record or every sale.

- wee mak at eitherein । श्रीतशासूद्र का काल करेंग to Minney or against 11 क्रमीओं के बहुराति के सत्ते का कर्तन

a minimum art grappe, sola

१४ अञ्चल का जाहरूक करेन

se mit in stead on a few au

१९ सम्बर्धाती का स्वाहतस्य वर्तन 43 fengilen er angan-mên

रूप करों के अवस्थान का बर्तन १३ पुराय बांबनेवाते के पूछक माहि का कार वर्षन १५ प्रतिका के राजने के चल कीए न पातने के दोनों क

10 सम्बद्ध का प्राप्त करेक

en women of moutant is my on which

by wanted no engage while

रह जनसङ्ख्यो को सोनादेश तर्म और सीनो

De course in modition as asserted with

14 दिवा और अब के का तेले और अहिएत के करते जाति

के राज्य और प्रधानों की प्रशा का स्थानक वर्षक 12 करतिका स्ट्रीत को संबंध और संस्था का करेक

¥8

ю



पद्मपुराण भाषा

चतुर्थं त्रह्मसण्ड

हला अध्याय

-3-4-9

त अहल इ. एक ज्याराजा अहल एक है एक इ. तथा है एक से संग से शाखों का सुनना होताहै तिससे ममकाद की भाकि तिससे ज्ञान और तिससे गति होती है इ. तिस व्यवन्त पानी मतुष्य को हात आर ।तरात गात काता व व त्या आवरत का निर्माण का पार्जी हैं क्या नहीं ब्रम्ली जगती हैं तो वह वैकाद नाहारा भी २ पदानुसम् भाषा । पाषिपों में श्रेष्ट जानना चाहिषे ७ श्रीकृष्णाजीकी कथा सुबदर वैश्वव जामानिन कोना है ज्योत निरुद्धों जो अटर बहनाहै से वह परिस्तों

सा राम जाराने पोत्रयहें = जिस जिस स्थानमें करणानीकी कथा होती हैं तिस तिसको भगवान होडकर कहीं नहीं जाते हैं र जो व्यथम , तत (तत्त्व) नगवान् श्राक्तरं का का जात है है जो ज्यान लुप्य कृप्याजीडी कमाके व्यारममें विद्यवस्ताहें उसको सीमन्यत्सर पंगत २००२ निकति नहीं होती है १० जे पराया की क्या सनकर निन्दा बरने चौर हँसते हैं उनके हाओं में बहुत क्रेश देनेवाले नरक सर्वेत्र रिश्त रहते हैं १९ जो श्रीकृत्याणी के चरित्र सनने की इन्डा करता है तिसके और जन्मके इक्डे किये पाप तिसी र का उरता व तिराक्ष आर जन्मक २०७ कप पाप तिसा झास मारा हो जाते हैं ३२ च्योर महिल्से जो श्रीकृष्य चरिश्चों को सुन्तता है तो नहीं जानते तिसकी क्या गति होगी १३ पापी मनच्य है इन्नर-हत्या कातिस पाप, पराई सीवा हरना, महिरा पीता बाँर कोरी ये सब पाप माश होजाते हैं १५ जो मनुष्य पापको करके चंडे को नियम बजनाई तो उसके पाप इस प्रकार सार ष्यन्तिसे रहेका समृह नाश हो जाताहै १५ प्योर जिसके घरमें थी-क्रणाजी के चरित्रवासी पुस्तक स्थित रहती हैं तिसके परके पास यमराजने दत नहीं जाते हैं 9६ तब जैमिनि जी दोसे कि है नहीं. व्यासती ! वैकाव विजवो वहते हैं इसमस्यमें तिनके जानने चौर व्यक्ति । वेण्णेश प्रमान शहत ह इस्तम्पयम तिनक जानन आद तिन्हीं हे उत्तम माहत्स्य जानने ही मेरे बाद्धा है जिसकी बाय कहिये 30 वस व्यासजी बोले कि है बाद्धा है, जिसकी ! तो पखे मतुष्य वैद्यारों है चरसों है घोचे जलको महिसे सहतक में वी चता है तो उसको तीर्थ के स्वान की कुछ व्यक्त्यकता नहीं है 30 पता है तो उत्पन्न तीय के स्थान के जुन व्यक्त्यकरात जो हैं है। जो मनुष्य पत काल मा स्थानित क्षा मनुष्य है तो उत्पन्न कार्यकरात आहे. तो उत्पन्न कार्यक्रमा व्यक्तिक पाप नजा है जो हैं है १६ जिसके कुल में पढ़ भी विच्छ होता है ते उसका कुल को पायी है पुरू हो तो भीपनों जास होताता है रू के मनुष्य हिंता, हम्म, कुल, कुल, ओम पाया मोहरी हीन होते हैं में बैज्याब जानने चाहिये रू १ विनात के बक्त मुच्छुक, सब आणियों के दिता में रहा, सकारहील कार्यक्त सत्ता के प्रकृत मुच्छुक, सब आणियों के दिता में रहा, सकारहील कार्यक्त

- १५ नकालपः । स्त, पुराई क्षियों में नदेसक चीर जे पदावशी के बत में रत होने रत, नगर जना में बनुतक जार ज रूजराज में से में रेस करते हैं वे वैयाब जानने पोभ्य हैं २३ जे तुलसी की माला पारण करने बाले हरिशों के नामों को माते खेर हरिजी के चरगजरों से सीचे जाते हैं वे वेजाव जानने चाहिये २४ तिनहें कार्ने और माथे में उसम तुलसीली का पत्र कभी दिखाई पदता है तो वे वेजाव जा-दमम् तुलाहाता का पत्र कमा बहुत्य पुनता ह तो व नेपाय गी-में होग्य दें दूर पालक्षिय के सेम दें हैता, अडाए के दें से दीन ब्योर ने तुलाती को सींचने हैं वे नेपाय नुलय नाले पा-बिस पर व तुलाती के दिश्यों के एमते, क्षणावान में वे तहा-विशेष ने दे तुलाती के दिश्यों के एमते, क्षणावान में वे तहा-विशेष ने दे तुलाते के दिश्यों के प्रतिके चे पाले को तहाने हैं वे बेच्या मुनया जानने चींचा हैं जिसके पासे शास्त्रकार की मूर्ति स्थित होता हुए को को स्थाप को कारते, विश्वाण कारते, विश्वाण कार्य बोर तीन मुख्य में ने इसा बहते हैं वे बैणाव नालने गाणिये प्रत

चतुर्व ब्रह्मसम्ब ।

पराई ब्याँर ब्राह्मण की इच्च के विषकी नाई देखते हैं ब्याँर जे मगदान् की मैक्स को मोजन करते हैं दे रोधार महत्वा जानमे योग्य ना पान का नवप क राजन कराव व पान के नवह पाननेवाले और हैं ३० जे बेदराज़ में अनुरक्त, तुलसी के बनके पाननेवाले और राजाहमी जनमें रतीं वे वेंग्यन जानने चाहिये ३१ ने ओहण्याजी राबाहना त्रतम रतव च वन्त्रव वानन चावच व उ च चाक्रचका के ब्यागे अन्दासे दीप देते ब्योर पराई निम्दा नहीं करते हैं वे वैन्यव जानने योज्य हैं ३२ सूतनी बोले कि हे म्हान शैनक ! जैक्षिनियों के पूजने पर व्यानली ने वह जिसलस्य से कहा चौर मैंने जो प्र-च प्रसम् पर ज्यादाना मुख्य । स्वाराध्य स्व कथा न्यार सम्प्रणा अस् संस सं ग्रुकती से सुना तिसको उत्ती क्रम से पढ़ा है २३ जे उत्तम मनुष्य अज्ञापुक डोक्ट इस व्यवस्था की मुक्ते हैं ये सब पापों से स्टब्स रिव्युजी के परंपद को जात होते हैं २४॥ हति औपाद्रो सहारमाने गद्रात्तारे स्थासनीमितिकसारे प्रवसेऽत्यापः १ ह

दसरा ऋध्याय

सगवाद के वर्धिस के तीरने का मारात्य वर्धन । सत्तारी बोले कि वे शीनक ! व्यास चोर जेमिनियों के संवाद, सुननेवालों के पाप नारा करनेवाने ुं े वर्ध को करताई ुनि ? जेमिनि बोले कि हे सुरो ! हे प्रमो ! पापी मतुष्य विस्त वर्ण्य से

थ पण्युतास आया। अगराज्य के मन्दिर को जाता है पक इस समय में मुभमो बहिये र तब व्यासतों में लि के हैं मैंमिन । जो मनुष्य श्रीकृष्य जी क मन्दिर में लीपता है वह सब पायों से बुटकर श्रांत होकर हरिस्त के रूपान को जाता है द जो अगराज्य के मन्दिर में जनसे लीपता है तिसके

पुष्प को में संक्षेपसे कहताई सुनिये ४ हे उत्तम ब्राह्मण ! तहां पर वित्तनी घोन दिसाई पहली हैं वितनेही हजार करूप वह कियाजी के मन्दिर में बसता है 🐰 पुर्वसमय द्वापर पुगमें दणहरूनाम चोर क मान्दर में बस्ता क के जुन्तमध्य क्षापर पुरान प्रकारण पर हुआहे यह मनुष्योंको भय देनेवाला, जाह्यसांकी १६०२ पुरानेवाला, मिर्मों का नारा करनेहारा, ६ फंडर बोलनेवाला जब दवाई सी के गमन में रत. गठका मांस खानेवाला, मदिश पोनेवाला, पासनदी. गमन में रत, गक्का भारत खानकाता, गल्दर जानकाता, राज्यस्त, मनवर्षों का संग सेवन करनेवाला, ७ बाह्यसों की जीविका डीनने वाला, न्यास का हरनेहारा, शरकायतों के नाशनेवाला मीर वे-स्वार्थ्यों के हावनाव कटाल में लोलप था ८ एक समय में यह मह-मवि किसी विष्णाती के स्थानमें भगवान की द्रवय चुराने के लिये गुण्ड (१४९८) एव एरान्स अंग्लान् का द्रवर पुरान के हार्य भया ६ तदननतर देवस्थान के हार्य प्रदेश पर पर पोर होयाड़ से पुरु क्यन्ते तव पांचड़े तिम्मपूर्वि में पांस्ता मया ३० तो इसी कर्म स पूर्व्य लीपी होगई च्यार व्यानस्थि लोडको स्वाकार्यों ते किंगावको उत्पादकर ५५ मगवान के स्थान में प्रवेश करनाभया जोकि क्षेष्ठ निमानों से शोनायमान, रक्त चीर सोने के दीपीसे प्रक. बढ़े चनवजर से रहित. १२ व्यनेक प्रकार के समन्त्रित फर्ली ते चुक, जनेक बर्तनों से ब्याकुल ध्योर सुगन्धित तेल धी

स युद्ध, अन्यत्व सती से बायुक्त ज्योद स्थापित्रत तेल ब्रेट सुराणने सिर्पार्ट है 5 तर्तापर हमा गीत्र प्रमुद्ध समोद्राद प्रमुद्ध में रामानान सोन्द्राप्ट गीताम्बराली समाधनको स्थाप ५८ जोत्र प्रोधीस के देखानी के रामानाकर तिसमाद्य में प्रगारीता होएया पित यह बहुदेखा कि मीरी करूं या न करें इससे क्या से वह वेशा पित यह बहुदेखा कि मीरी करूं या न करें इससे क्या से वह जोत्र इस्पर कार्य होता है यह बहुद इस्प्र प्रमुद्ध के लिये कर कर है यह इस्पर कार्य होता है यह बहुद इस्प्र प्रमुद्ध के लिये कर कर है यह उपनी में प्रधान के देखाँ क्यांत्री विकास सब नहमां बीचोध

भूतर्थ ब्रह्माणस्य । सर्वेत द्रायादिक स्वत्र उपलब्ध से से एवाची में शिसराई ३५ तो ब्रह्मिक स्वृह्मते मृत्यूप जनकर देश्क्रिय कार्य आयादेवाची परात्रिकत से ब्रह्मिकी १६- व्योर समझे बही सोवल जुव मान कुत दूर गया देश उपलब्ध में स्वर्ण के साम प्रत्यूप के स्वर्ण के साम प्रत्यूप के स्वर्ण के स्वर्ण के स्वर्ण के साम प्रत्यूप के साम प्रत्यूप के स्वर्ण के स्वर्ण के साम प्रत्यूप क

लियं प्राप्त होगयं ५५ श्वात उसका चमहन फ्रायस साधाकर तुगम राहसे लेगयं तिसको देवकर कोशपुक होकर प्रयुक्त प्रिय-पुत्त मन्त्री से पूँजतेमये ५५ कि हे बुर्जिमत्, भित्रपृत्त ! इसने क्या पाप वा पुरुषकर्म क्यार मुक्तसमेत मेरे स्वयं वही २५ तक पित्र-गृप्त भोले कि हे लोकोंके स्वासं! !हे प्रमुक्ततीके आई! ब्रह्माने एणी में जिसने पाप बसावे हैं वे सब इस मार्थने किये हैं यह में सत्पत्ती ा करना पात कामध ६ व बाद इस मुस्त सिंग्य ह यह म सरसी ह इतहरा है २ पुनित्त हरसा बाद पात का व्यन्नेशाला मुहानाई हैं तिसाड़ी मुनिये २५ तब धर्मारात बोले कि है मंत्री। इसडी क्या पुष्प वर्तमाना हैं जिसकों मेरे व्याप करिये उसकों तुनका जिस प्रोच पह होगा विद्या करोगा १६ पातमाजी के य बचना तुनकर वस्सानेत पिमगुत जावने स्वामी के हाथ ओवकर मोले २५ कि हे राजत ! यह पावियों में क्षेत्र मनवान की हव्य चराने के लिये च्यापा वहां भगवान् के हारमें अपने पांचीके कीचह को गाँउ दिया था २= उससे एव्यो लीपी, बिल और हेदों से रहित होगई थी पा ५० अलत ४० था आहा, वलत अपर इत्तुत स चहत हमाई यह तिसी पुरुष के प्रमान से बड़े मारी पान इसके सम ना ह हाग्ये यह तुम्बार इंग्डले लिक्स्त कर बेंकुंड जाने के योग्य हैं २६ ज्यासर्जा बोले कि पित्रपुत के ये वचन सुनकर यसराज जी तिसकों सोने का पीठ बेंदने के लिये देते मचे नहीं पर कह बेंठा तब बमराजर्जी ने उसकी पता की ३० और नम्रतायुक्त होकर शिर से नमस्कार कर उससे बोले कि तुम्हारे चरवों की फूलियों से इस समय में मेश मन्दिर पवित्र हुआ है ३९ च्यार में निरसन्देह कृताथ हुआई है साथों ! इस समय में भगवान के उत्तम मन्दिर को जाइये ३२ जो कि प्रोक प्रकार के मोर्गों से यक जन्म और मत्य का निवस्त क्रमेशवार है जातना बीत है है जीति । ऐसा कहर क्रमाज की के मोही पर 12 सामीती है जात जात क्रमाज कर क्रमाज की के मोही पर 12 सामीती है जात जात क्रमाज के स्थान क्रमाज क्रमाज के सामीत के सामीत के 12 रहा क्रमाज क्रमाज है सामीत की मोही की 12 रहा जीतीय स्थान है की मीही है है है कि क्रमाज के सामीत की मीही स्थान है की मीही है की मीही है है है में मान क्रमाज है कि मान क्रमाज के सामीत क्रमाज कर की मीहूर पत्र क्रिस्तेंद्र नाम क्रमाज है है में कहा के स्थान क्रमाज कर की मीहूर पत्र क्रिसेंद्र नाम क्रमाज है है में कहा के सामीत क्रमाज कर की मीहूर पत्र क्रिसेंद्र नाम क्रमाज है है में कहा के सामाज क्रमाज क्रमाज

तीसरा ऋध्याय रोज्यानका माहतम्य स्थ्न ॥ शोमकानी बोले कि हे सुराजी ! कार्तिक का माहतम्य मेरे व्याने

क्षेत्र ने दूर के प्रकार के प्रकार कर के प्रकार के दूर के प्रकार के दिन के प्रकार के दिन के प्रकार के दूर के प्रकार के प्रकार के दूर के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार कर कर के प्रकार के प्रकार कर कर के प्रकार के प्रका

प्याप अध्यक्त । को देकर भोजन करता है तो उस रुशेद अव्यक्षे पाप नारा है। जाते हैं = जो पी से गुरू सुन्दर रस को अवसाद को देता है जा सुद पार्वीस धुटकर मगवान के स्थान को जाता है है कार्सिक में जो मनप्य एक कमल भगवान को देता है वह तब पायों से रहित होकर ब्यन्त में विण्युपद को जाता है १० जो मनुष्य श्रीहरिजी के प्यारे बार्तिक में प्रातःकाल स्वान करता है वह सब तीयों में हनान करने के फल को प्राप्त होता है। १९ क्रांनिक में जो राज्य मनष्य ष्याकारा में दीप देता है वह ब्रह्महत्वा त्यादिक पापों से छट पर हरिजी सर्वेब प्रसन्न रहते हैं ३३ जो बाह्यण वार्तिक में कप्य-जीको परमें हो समेत दीप देता है यह दिन दिन में कायमेवयहा के फलको प्राप्त होता है १५ हे केप्र बालागा ! दीपका इतिहास स-मेत में माहात्म्य कहताहूं एकावश्वित होकर सुनिये १५ पर्यसमय बेतायुग में वैकुरठनाम पवित्र ब्राह्मण हुन्या है जिसके संग के प्र-मावले पापी मुक होता है १६ एक समय में आध्यों में केष्ठ वेर्डुट हरिश्री के मार्ग चीसे पूर्ण दीप देकर घरको चलामाया १५ तम दीप के भी खानेके लिये मुसा च्याताभया जकतक मुसा जाने का प्रारंभ करें तकतक शीप च्याप्ता कारित के करते देश से माना तब तो भगवान की कवासे मसे के सब पाप मारा होगये ६८ फिर सांपने मुसेको फाटा तो मुसा प्राप्त रचाम करतामया तब यमराजनीकी जातासे उनके दृत पारा म्हार महर डाथ में लेकर २० तिसके लेने वे लिये जातेनये और चर्म

वी रिसपों से बोज़ार जनतक लेजाने का मन करते गंधे तभी ग्रांत, षक माना भार २५ विष्णुकी के हुत नारहुजातले नारह एस चढ़कर प्राप्त होना के बर आंक्षा में गांक्सिय से युक्त गुम विमान २२ हुन्द सोने से बनाहुज्या दन्या के जनुस्कर जानेकाता मनाधान की हमाने स्वाप्त होज़ास्य तब नामान के हुन मुसे की

पतर्थं ब्रह्मसम्बद्धः।

अंदिश मार्क है इसका तुमने ज्यांकी क्यान तिया है इससे जो और नवेश मार्क है इसका तुमने ज्यांकी क्यान तिया है इससे जो और नवेश मार्का हो में जाने एन्ट्रे में स्थानत के जबत सुनकर करें हर मार्माता हो में का स्थान के दूर मुख्ये किया जाता. एन्ट्र प्रमान से ज्यापतीय इसको सम्मान के पुत्रों के जिल्हे में एन्ट्रे प्रमान के ज्यापती है यह क्या क्यान के की क्या हैं तम मार्मान के तुम कोई कि सार्वादी के आपते दीच को इसने प्रमानित किया.

हेन बात कि चानुवर्धना के जान पूर्व के बात करा है। है २६ हे बमदतो !तिसी कर्म्स से हमलोग विष्णुतीके मन्दिर तियेजाते हैं जो बिना हच्याके भी विष्णुजी के दीपको अञ्चलित जी के समीपमें रहते बीतते मये ३९।३२ तदमन्तर मृसा भगवान ता के समापन पूर्व करता जा होता भया और इस राजकरण मेर हमासे मुजयलोकमें राजकरण होता भया और इस राजकरण ने पुत्र और पौत्रपुक्त होकर बहुत फलतक भोग किया ३३ फिर सरजुलोक से मनवान की हमासे गोलोक को चलीनई सुतत्री बोले कि है शीनक ! तो मनुष्य मंत्रिसे उत्तम दीपमाङ्गस्यको सुनता है

३४ तो वह सब पापेल बटकर भगवानके स्थानको जाता है ३५ ॥ इति श्रीयाचे नदाहराचे अवसम्बद्धे दीवदानमादास्यं नाम क्रीयोऽत्यापः १ ॥

चौथा ऋध्याय

जपनीतनस्य माहातम्य वर्षन् ॥

रोंनक्सो बोसे कि हे सतती ! आप मुनत्को संसारकरी समझ

्ततं के तियं नाक्तर हैं इससे जरानी के महाहाय के डाईस स्तृतं के तियं नाक्तर हैं इससे जरानी के महाहाय के डाईस स्तृत्यों के इन कसी चादिय 5 तम सुतानी क्षेत्र है है हमझा ! ह मुन्देयों में अंग्र शीका ! जो तुमने पूंचा है तससे में कहताई इससे हैं स्थान में गूलेसमय में नायदानी ने ब्रह्माजी से सुकाश दे

भारत्वी के हैं दे दिवास प्राणां ने काफी स्वार्थिय के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ के स्वरूप के स्वार्थ के स्वरूप के स्वार्थ के स्वरूप के स्वार्थ के स्वरूप के स्वार्थ के स्वरूप के स्वार्थ के स्व

क्षति हैं है जो की प्रितास के जिल्हा में भी है में है कि स्थान में में में है में है कहा है जो से हैं में है कि हो हो है जो है में है

जर्मता में मत करते हैं मिललाई 5६ गंगा, याक जो सरस्वकी के जर्ममं स्थान करने से जोएगण होतारी यह जर्मने में मत करने से होताई 50 जो स्थानक में मिला दें आह प्रत्येश जो का पुष्प होताई के जर्मने में मता प्रत्येश की प्रत्ये कर प्रत्येश जो के हैं शिलाम हामां होता मिला कियों कर हम त्यारे मी होते हैं शिलाम हामां होता मिला कियों कर हम त्यारे मिला कर महाता मोला होता है जे सारद शिलामा हुआ जी हमिलाम हमारा, है सारम हिलीग, अम्बन्स, मीला, माना, बुल्मिना, प्रद्यान, २० बामांकी और सार्प्य होता, बुल्मिना एउपहान है यह महार्थी होता, करने हमारा होता है पहने पुर्वश्राम पर्पास, २० बामांकी और सार्प्य होता है पहने पुरुक्ताम एउपहान

ें र जो कर्मानामान वार्थी हैं भेर कर राज्य साई है । प्राची कारण की की कि साई साई में इंग्लें पार्थी प्रदेश प्राची की कि साई साई में इनके पार्थी प्रदेश प्रदेश की कि साई साई में इनके पार्थी पर इसके कि साई माने कर कि साई माने कि साई मान

है वह बोनमें स्थित होते हैं है बहायुने ! जो अंग्रेस है हणाई बी पारी जाती के जात के जात के लिक्सी है है वे बारी पारें देवा स्थित होते हैं बेद स्था दूषण में में में पेता का नहीं देख है दूस 12 इस हमारामाझी काइस समान वा ऑक्स कोई का नहीं है देश है का हमारामाझी काइस समान वा ऑक्स कोई का नहीं है वे हो मामा जो में मामा पारें मामा का का मामा का का का का का है वे है मामा जो मों मामा पारें मामा का का मामा का का का का का एक्स्टरों, तहनी में हमानाक को मोमान करता है 3 देश करता में मोजना मामा पारें पारें मामा का का मोमा करता है 3 देश करता

२ ३) अभाषक मूर्व कराजाला धना रावन करावाण भा करतरीह है जिल सबसे आता है भी क्षेत्र विभाव के आता है ५% विष्णुकी स्त्री महिला के आता है ५% विष्णुकी सी महिला से एक्ट्रांग है विकास के स्त्रीत है तह भी किए सी किए सी है विकास है किए सी क ताब यह भागमाने के शामा जात हाताब (४) अवसी का तत करते । बाता जो सर्वेद पुष्प भी कराति का मामाना के बेहिल्जीन की प्राप्त केरावि ६५ मामाना और पार्थी जानी आधारतीना। सुन्त-अटटार, प्रवर्धीनामा और इसिपीली के उत्तक कुए पार्था केरावि का प्राप्त करती है ६५ जामानी में तत करनेवाला एवं एतानेक स्वाप्त प्रश्नास्त्र पार्थी के देश जामानी में तत करनेवाला एवं एतानेक स्वाप्त प्रश्नास्त्र पार्थी के जारी होता जानी करनेवाला अस्ति में सत करनेवाला प्रत्योद स्वाप्ताला पुष्की, कराति समानामाला असके और मोक्ष १२ वर्गसाम भाषा । विश्व क्यान्ताम नेवार्थ भाषा होता है पर विश्व क्यान्ताम नेवार्थ भाषा होता है पर विश्व क्यान्ताम नेवार्थ भाषा होता है पर विश्व क्यान्ताम नेवार्थ क्यान्ताम नेवार्थ क्यान्ताम नेवार्थ क्यान्ताम होता क्यान्ताम होता क्यान्ताम होता क्यान्ताम क्यान्य क्

देवि श्रीराद्म सद्दालुमाणे महालयके महानारदर्शनाई जर्वतीमतरशहरूम्य नाम चतुर्थोऽज्यादः ४ ॥

पांचवां ऋध्याय इमेरियक सः सर्वन्॥

गोलकां के क्षेत्र के स्वातृतिकात् है। दूसकी प्रकृत के क्षा कर कि क्षेत्र कर के स्वतृतिकात् है। दूसकी वेदान के क्षित्र कर के स्वतृतिकात् के स्वतृतिकात् के स्वतृतिकात् के स्वतृत्ति के स्वति के स्वतृत्ति के स्वतृत्ति के स्वतृत्ति के स्वतृत्ति के स्वतृत्त

प्रसमुद्धो सुनता अदायुक्त होकर अक्रसमेत एम्बीका दान करता : बहुत गुरुपुरु, बहुत दुष्पाली, दक्षिणासम्ब गान्, सीन स्त्री म स्त्रीत गुरुपुरु, बहुत दुष्पाली, दक्षिणासम्ब गान्, सीन स्त्री गान स्त्रीत सीनेको मुश्कि। देताहै तिसके पुत्र निरुष्य होताहै ६ जो सी पूर्वजम्म म् कुप्टसे परावे बन्तकको माराजलती है वह तिरुप्य बान भूवतन्त्र म कन्द्रत चरान बारावरत नारज्यात है का तासी पा सब्द्रीत होती है ५० जो सी अदायुक होकर सेले में मूर्तिका दान भकिसे ब्राह्मण के परणातल का पान, १९ पराण सुनना और बहुत दक्षियाको दान करती है उसके बहुत शहके होते और निरसन्दर्श जीने हैं १२ जो पुरुष जलमें हबते हुए वालक को वेसकर नहीं नि-फालता है वह पुरुष इस जन्ममें पुत्रहीन होता है चौर स्त्री जो नहीं निकारतार्ते हैं तो वह भी विश्वच पुत्रपतित होती है १३ तो भीत् तिकारतार्ते हैं तो वह भी विश्वच पुत्रपतित होती है १३ तो भीत् तिता चौर सक्समेत कुम्बई को झाडाच को देवे, गुन बालजत बरे १४ ब्याट वर्षकी कम्पाका चित्रह करदेवे चौर पुराग को सुने तो निरुवय उसके पुत्र होने चीर सक्वाप नारा होजार्व १५ जो महुत्य पर्यक्रमम्में खतिथि को निराश चीर कोवसे दण्ड करता है यह नि इच्य पत्रहीम डोताहे १६ वह ब्राह्मण चीर प्यतिथि को मित्रसे पूजन करें काम क्यार जतका दान तथा सुन्दर देवता का मन्दिर इतवाचे ९७ पर्वजन्म में जो स्त्री तथा पुरुष गर्भहत्या इस्ता है तो उसके निरुवय लड़के नहीं जीते हैं १८ जो व्यपने पति-समेत की प्रकादशी का वत बरती है वह प्रत्येक जन्म में सुन्दर रामत का पुरुष प्राप्त के सुन्दर मान्यपुक्त होती है १६ जो गृह पुत्रपुक्त सीर स्वामी की सुन्दर मान्यपुक्त होती है १६ जो गृह समस्य विमोदित होकर गडको मारडालताहै वा बाह्मणी को हर-ता है वह मधुसक होता है २० हे जाहान ! इस गठके मारनेड कर को बह जो पाने से पुरुष करता है तो इसलोकने पुरुषके प्रमाधने कन्या होता है २१ है बहुएश ! वेतायुगमें श्रीपरनाम राजा पुन-होता और उत्तरात हुए और उनकी सो हेमप्रमाननी हुई २२ यह राजा सब शासके जानोबाने और सब मनुष्यों के हित्तकी इच्छा बरतेहारे व्यवने वहां काये हुए ज्यासजी से पुन्ते मधि कि है माहण है में पुत्रहीन बेरोई २३ तब शामके दिये हुए सोने व्याहिकों से बने हुए पीठपर बेटे हुए व्यासती के सना श्रीर सनी ने व्यापना प्रसन्न

के धोये जलको विधा तब व्यासनी राजा के नमतापुरु वचन सुन कर उससे बोले २४। २५ कि हे राजुन ! जिसको तुने पूँछा है और क्द्र उसस बाल २ इ.। २ इ. १७ व. १००० १. शिस कम्पेसे पुत्रहोनही तिसक्षे सुनी तुम्हारी यह शनी भीर एक श्रीक्षीके व्रत्याले जिससे पुत्रहोनही २६. पूर्वजन्ममें अष्ठ देहताले हासाक जतनाल जिससे पुजराना एक पूर्ववन्तर्भ जाते ने उत्तर चन्द्रनाम ये और तुम्हारी पहरानी सुन्दर अंगवाली रॉकरी नाम थी २७ एक समयम तुम्दोनों राहम चन्ने जाते थे तुत्र एक नीच् मनुष्य का पुत्र जलमें दुसते हुए देखकर भी तुम दोनों ने मिन्दा गुण का अब जागा हुए हैं। इस प्रकार मा गुण आप । भारतिकारी कर विद्यालियां जो बंद मीक्या पुत्र बहुत्य समाया पर तिसी कर्म के प्रभावत मुस्तिमां के पुत्र मार्ची हुम्मा है मुक्ता एउपले प्रभावती कृत्य होने सामा जोता हो। प्रोपोर है एवन यहां ने हिस्स है है प्रभी हस समवर्ग किस पुत्र के सिम्मा पुत्र कर कर कर कर कि है प्रभी हस समवर्ग किस पुत्र के सिम्मा पुत्र कर कर कर कर कर कर कर है। अजिस स्वर्ग के हैं। अजिस किस के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। अजिस के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। अजिस के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के बेल्की सास्त्रपूर्व के ही। सामा कर है। अजिस स्वर्ग के स्वर्ग के सामा कर है। अजिस स्वर्ग के सामा कर है। अजिस स्वर्ग के सामा कर है। अजिस सामा कर है। माश होकर निरूपय पुत्र होगा ६२ ब्रह्माओं तो पापराहित होगया ३३ तदनन्तर वर्षके मध्य सबसे पश्चित पत्र उत्पन्न हवा जोकि सब एव्वी का राजा हुना सुन्दर और फुलमें श्रेष्ठ भी हुन्या ६५ सृतजी बोले कि हे आग्रस शामक !यह मेंने संक्षेपस तुमसे कहा है जो इसको भीक्से समक्त च्यार उसमदान बरता है तो पुत्रहीन पुत्रको प्राप्त होता है ३५ स्वीर जो की मकि से सुनकर बाह्मकब पूजन शास की कड़ीहुई विभिन्ते नित्यहीं बरती है तो सुन्दर पुत्रपुक्त होती है ३६ और जो मनुष भक्षिणे पुस्तकर्गे सोना, चांदी, चण्डा, फूल, माला श्रीर चन्दन देता है उनके सब पाप नारा होजाते हैं ३७ खोर जो मूर्ण शक्षाय पूर्व जन्म में श्राप्तच के बालक को मारकासता है, तो उसके सातजन्मों से कर पत्र होताहै ३०॥ क्षति श्रीपारो अध्यक्षत्रहे अद्यानार संसादे कर्मनियासकापनंताय प्रश्नायोऽप्यायः ५. ॥ चुना सहस्यक्ष : १३ .
सुन्दा जा होनेका हा पर गर्न व ।
सेना जी के मिल प्रमुख में मिल प्रमुख मिल प्रमुख मिल प्रमुख मिल प्रमुख में मिल प्रमुख मिल प्र

ा (अपुत्र) च्या प्रायम कर मध्य त्याह वह (अस्पर क्या) मामाज्य के स्थानमें बहताहै ५ च्यानमाय में वह स्तरी है कुरी मामाज्य के स्थानमें बहताहै ५ च्यानमाय में वह स्तरी है कुरी पुत्र होवल स्थितात्री के पूर्वमें जावर सोगोड़ महत्वमें स्थित होतर मुख्यों भीना स्तरात है ६ हे बुनिजी । आहानस्थान में जो पुत्र प्र हाजा दें सिनकों सोच्या बनाये साम करनेवाल जावाती गीसमर्थ हाजी हैं ७ पृथ्वि चीर चुणे की मुँहे तो गिनीजनाहों हैं पर्युत्र महा नहा व ज पाल कार क्या का प्र भी ब्राह्मण के स्थापनमें फल नहीं गिनसके हैं = हे महामूने ! पूर्व मा नासक के जानामा क्या गया गरा स्वतिक व व व गया हुए। हिंद समयमें नारहजीने संसार के अपन्न करनेवाले नहाजी से पूंजाया कियनो नहाजीने कहा था तिसको तुसभी सनो ८ हे जहान ! पूर्व समयमें डापर युगमें कत्यन्त सुन्दर वेश्या हुई जिसके सुन्दर काल, हरियों के समान नेश, सुन्दर फरिहांब, पवित्रहासयुक्त ९० घोर चंत्रल कटक्षादाली चारकासिनी नामधी यह सब प्रापीस युक्त करी श्रीर देश में जाती नई १३ कारंपर समृद्ध के संगम में मनुत्यों की क्यांक्री रहन है में जाती नई १३ कारंपर समृद्ध के संगम में मनुत्यों की क्यांक्री सन् देशका में जातीनाई व्यर्थ कार्याप स्वामान बैठकर वात्रपर सुवसान में जातीनाई व्यर्थ कार्याप स्वामान बैठकर वात्रपर सुवसान के कार्यापर १२ विश्व प्रमुख्य महत्त्वकी मीतिय संजुक्त लगावेदी मई और तिस बीड व्यर्थीचार्य प्रमुख्य कीता युक्त होस्त्र भनते तिये नगरको जातीनई १३ वहांपर किसी व्यभिचारो के साथ स इसा से संकेत करतीमंड तो राजिमें विमोदित डोव्टर बेश्या तो बन १६ प्रमुख्या भाषा । में संकेतमें गई १२ चरन्तु जैयर मोजा में नहीं मचा तब वह रस्कार प्रेम्युक्क हुई कि मेरा कान्य वर्षों नहीं कामा बचा सार्च कांट्याप्रों में तो मही कि लिया १५ प्रसार निवाल क्या संकेता के प्रोहण्डर प्रमाण क्या और साँ के साथ तो नहीं व्यक्तिवासपृष्ट हुम्या में बहु इस्के के बीचमें शोषपत्री हुई कीक़ रहा स्वत्येताचे के सार्व व्यक्ति प्रभावता से सहा महिलावाई देने से मारमा मंत्री में ई ४० कि सही स्वत्येत सामन्त्र देवान में मारमा संक्रम था प्राप्त स्वत्ये

न ने वे जी हा के बेच पा के प्राप्त के प्राप्त के प्रक्रिय ने प्राप्ति हैं । प्रक्रिय ने प्रक्रिय ने प्रक्रिय के प्रमुख्य किया कि प्रक्रिय के प्रमुख्य किया कि प्रक्रिय के प्रमुख्य कि प्रमुख्य के प्रम्थ के प्रमुख्य के प्रमु

प्रमातात है हुतों में मारकेंगों २५ कोड़ सूर्य के सामा दीकी बत्ते च्यादि एससामुंडों से भोरपेय सब प्रमाताती के हुत रोते हुए भागावर २६ उस्सोमें डीक्स सस क्यान्य प्रमाताती के हुत रोते भव तब प्रमाताती भी कथा हो हुनगर पित्रमुत से नोते २५ किंद्र मीक्या (के प्रप्तात के प्रमातात का होण वह पहुले हुए सुनास सब प्रमातात का स्वाप्त करा होण वह पहुले के प्रमाता के प्रमाता का स्वाप्त करा होण स्वस्त प्रमाता के स्वाप्त करा स्वस्त के स्वाप्त के स्वस्त के स्वाप्त के सब गहनों से भवित बेस्या पन की इच्छारे व्यक्तिकारी पुरुषों की बादांशा कर किसी पूरी को शोकड़ी जातींगई ३० और तहां पर कार देवस्थान में स्थित होकर पान सायत तिस वर्षे हुए चुले की बोतुक्से भीतिमें लगावेती महें है ६ ९ तिसी पुश्यके प्रमावते देखा पायाहित होकर तुम्हारे दश्डमे तिकलकर वेबुश्ठको जाती है ३ र भागतहत हाकर तुम्हार प्रश्वस नगरकार समुख्या जाता व १६ सुतजी बोले कि है शोजक ! ये चित्रगुप्त के रूपन सुराज्य समराजनी क्योर उनके इत और न्यापारमें चित्र देते गये और वह नेश्या ३६ न्तर उत्तर इत कार व्यापारमा चार दत यह बार बार सा स्था १६ राजक्षेत्रमुक्त मुन्दर रथपर बक्तर विशासी के हुतों से बोदेत हों-बर विशासन के जातीभाई २१ जोते स्वीपर कोश कुतरे चुक्त इंक्टर अंगिएएकी की जातीमा महत्वी रिवत शोबर कारी हुतारे चुक्त के मोतांको क्रस्तो मुद्द ३५ हे क्षेष्ठ माझवा! जो मक्षिते मगदान् है स्थानमें पक्षसे चूर्ण देताहै तो नहीं जानते उसकी क्या पुरुष होती है है वह जो महिन्से इस कान्याको पहता वा च्यादस्से सुनताहै वह सब पापीसे सुटबल भगवान के स्थान बरे जाताहै ३७॥ इति भीभाग्ने महायुक्तमे बहलको महानास्ट्रक्ताई ग्रीप्रथापः ६ ॥ सातवां श्रध्याय स्रोतक्षरम् का मादास्य नरीन ॥ श्रीनकत्री बोटे कि हे महापुष्टिमान | हे सुन्दर्शियुक्त मृतर्गी सुस्तर संसारतार से मनुष्य दिस कमें से गोलाक पर आसाहै कोर राजाएमी के उत्तम महारुष्य को कार्रय ५ तम सुनजी बोटे

भूत प्रधानित के जम्म महात्मा के कार ने १ कर पूर्वा वा वहिं है है बावाने । है महात्म रोज (प्रशान महात्म महात्मी है के बावाने । है महात्म रोज (प्रशान महात्म महात्में का त्या के कि है सहात्म है भी है कि है का प्रशान ने १ कर गांव के है है दिवानों । का कि हम हो की है है दिवानों । का कि हम हमार्थ के कि हम हमार्थ के कि हम हमार्थ के कि हम हमार्थ के हमार्थ के हमार्थ हमारथ हमारथ हमारथ हमार्थ हमार्थ हमार्थ हमारथ ह

चनर्थ सहासम्ब

अप्याप्तम भागा । संदूष्ट मुनिये में श्लेशने मुजारे ब्लिय नामानाके दिना सब ६ नियमें प्राचना को अहमें में अहें सामाने नहीं है महाराजदिक प्रमानाम के इसे लिये हुए रहे पूरा 9 तिकर तिमाराज्य नियम प्रमाना के उसे की पूरा रहे पाए 10 तिकर तिमाराज्य ने माना होंगा है में नामाना नामाने की प्रमान की प्रमान की सामान की सामान की है नियम की सामान विकास नामान की स्थान की सामान की साम

विकारों है, जिससे तैयान जीवन पायेश रूप के किस है, जिस हो पूर्णिय होता करना के प्रकार कि एक्ट के किस हो प्रकार है, जिस हो प्रकार के प्रकार कि एक्ट के किस हो नह कि एक्ट के प्रकार के प्रका

च्यान, बुद्ध, पुत्र, स्त्र, सब चोंच च्यांक स्थापने दर्जी में साँकें मानी शामित प्राप्त के प्राप्त के स्त्र हैं के स्त्री गत्ने, त्यांकें के उपास्त्रीय के प्रस्त में स्त्री हैं के स्त्री गत्ने, त्यांकें के उपास्त्रीय के प्रस्त हैं के सात्र में स्त्री के प्राप्त के स्त्री के स्त्री में स्त्री में स्त्री के स्त्री के स्त्री के स्त्री में स्त्री के स्त्री स्पाई साँग इपाने से, गुरुआंध्ये क्षीते मोग फरनेसे, २३ दिरमास्पाद और कीटायासे उत्पाद पाय दे सद गुरुपस्थी मध्यी करानेवाले मुरुप्यों के शीक्ष्म नाम हो नामें हैं २५ दिनके सबयायनाए करनेवाले वनन मुक्त मिंगी जन करेगी यह प्यांच्या विभावस २५ उत्पादी वस्त्र करानेवालें के पाय जना बहार मिनेत होकर भाग्य से साँग के काटने से नामको ग्राम होगाई ५३ तम माना से साँग के काटने से नामको ग्राम होगाई ५५ तम माना से की ग्राम हो जनते

न्त्रभा कुणान अवसामा १३ वन मा सामक वयन सुनकर सामझी विक्युजी के प्राप्त काकर उत्तरि एवंगी के दुरुस्मासूकों कुट्या प्राप्त १६ तब उन्होंने कहा कि है बहार ! ब्याप देवताओं ममेरा एग्वी में जाइये में भी ष्यपाने मार्थी समेरा तहेंदी जानेका १५ ये मा रामके के बमन मुनकर बहाजी देवताओंसरेत एग्वी में शाह होग्ये तब कुण्यकों प्राप्तीसे भी प्यारी स्थिकाती को मुलानर १ स्थीते

कि है नेकि। में काबी में जाताई पूर्व्यों के मार नाशनेके लिप तम क ६ वार : न अन्या न काताह अन्य क नार नार्यकार्य में मी मनुष्यलोकमें करो। ३६ यह सुनकर राजाती भी एन्डी में मार्दे के राजपक्षकों कारमी तिथिमें ४० दिनमें स्थानानुष्टी कालमि शह बरने में सम्दरसप्पाक होकर दिखताई पहीं ४९तव सपनान रहता

तिनको पाकर च्यानन्दपुक मन होकर चयने स्थानमें अपनी राती को जावर देनेनचे तब रानी सवाजी को पालने लगी पर है बरम ! मारह ! यह तुमने जो पूंचा तिसको मैंने तुमसे कहा पह यह यह से रहाके पोप्पी ४३ सुकती बोले कि है शोनक ! जो धर्मा नार्थ, काम प्लीर मोशकात के नेनेवाले इस जनको सुनताई यह सब पापों से तुल्कर चन्ताम भगवान के रचानले जाताई ४४॥

इति श्रीपद्मे बहायाचे अवस्थते बहानास्यतंत्रादे श्रीमधारमीमाद्यास्य

बारवां बध्याय'

म्मार सक्ते का अक्षेत्र वर्धन ह

क्षार क्या राज का क्या पाय क जिलकों बोले कि है सुत्जी ! हे गुरो ! पुनेसमय में देवलाओं ने क्यों समुद्र मधादे यह सुनने को मेरे कीतुक उत्पन्न हुष्य है इस से मुक्ते करिये 9 तक मृत्जी बोले किहे लक्ष्य ! क्षेत्रिये समुद्र में गयनेका करण कहताहुँ दुर्वासा से १९९६ संबाद हुन्याई तिस को समिवे २ एक समयमें महातपस्वी, महातेजस्वी, महादेवसीके बांगचे उत्पन्न, सवार्ष दर्शमाजी इन्द्रजी के देखनेके लिये स्वर्गको जाते भये ३ तो उस समयमें महामनिती हाथी पर चरे प्रप हन्द्रऔ को देखकर बस्पराध की माला उनको देते भये ५ तब इन्ह्र उस माशा को लेबर हाथों के मस्तक में पहराबर सेनासमेत स्वाप मन्दन्तन को चलेमचे ५ सो हाथी उस माला को सेकर तोड़कर एकों में देंस देताभया तब महामृति कोशकर इन्द्रसे यह बोले ६ कि तीनों लोहों की लक्ष्मी से युक्त होकर जिससे तुमने मेरा व्यनादर किया है इससे निरसन्देह तन्हारी तीनों लोकों के तहमी नारा हो-जावे ७ तन शाय को पात्रज्ञ हत्व शीकरी चित्र व्ययने परको पते चतुर्घ ब्रह्मकरूड । २९ श्रायं तो क्या हेलले मये कि संसारों की माता शहमीजी व्यापक्षी व्यन्तर्दान होगई = लक्ष्मी के व्यन्तर्दान होने में तीनों लोक नष्ट ष्यन्द्रपान होगई – वेल्ला के ष्यन्तयान होन में ताना शीक गृह होनेदाने तम शूंक और प्लास से युक्त होज्य सन देनता निरन्तर मेरोनमें ६ नेवा नहीं बरसते गये तालाव श्लेर कुर्य श्लीर दस सुस सुख गये और दक्षोंनें फल चौर फुलहीन होगये ३० तव शूंल श्लीर प्यासस पीड़ित सन देवता प्रह्माश्लीकी सरण में आवर उनसे हुन्स प्यासस पाइत मन देनता ब्रह्मा अराध्य म अधिर उत्पत्त हैन्स प्रोक्स करते तमे ३ दे देवा खोचे राज्य सुनवर देवाण ब्रह्म सुन् ब्रह्माहरू मुनियों समेत्रकारावीशीरसमुद्धसे जानेनये १२ और क्षीर समुद्धक्ष उत्तर किनोर क्रांत्राची ब्रह्मालर मेंक्सरे जब और जानावाती बिल्हार्मी का ध्यानसन पूजन करतेनये १३ तब दक्षणुक प्रभु मान-साम सब देवामध्यों के कारर समझ डोक्स गठकरण चड्डकर ब्याने मये १४ जोकि पीताम्बर पहने, चार मुजायुक्त, शंख, चक मोर समाबो हारे. संसारों के स्थामी, कमन के समान नेत्रवाने, बिण्यू, संसाररूपी समुद्रके नायरूप, वनमातासे विभूषित, चुगुतता मॉर संसरक म जनुरू जानकर, बनुगाना विश्वासी, बनुगानी जान कोस्तुभम्पि असी में धारण क्यिकुए हैं तिनको देखकर मानन्दर्ग कांसुकांसे युक्त होकर देवता १५। १६ जयराय्य से स्तृति प्यार निरस्तर नमस्वार करतेभये तब श्रीनगवान बोले कि मो देवताप्यों ! (नररहर नमस्त्रर करतेश्व तब आनमबान बाल के मां देवांश्व) बर मांगी क्षितियों तुरुलीन यहाँ आये हा में बर देनेश्वला हूं तो बहोगे बढ़ी है नाथ है जोद तर होगा ५० तब देवना बोले कि है कुताबी ! है नाथ ! ब्रह्मराफे राजसे तीनों खोक सम्पदाओं से हीन होगये हैं देवता, अधुर और मृत्य्य भृंख कोर प्राप्तने ध्वरहुट हैं कुप्त इत सब ओव्हें की रहा श्रीशिषे व्यक्तिश्च स्वरूपि हमलोग प्रात हुए हैं तब अभ्याबान बोले कि है देवताओं ! आदाव के शाप से स्वरूपीओं व्यन्तर्यान होगई हैं १६ जिनकी कट्टाशमात्रसे संसार छहानील करनावान हाशह व ३० व्लावन करीवानाता ततात. प्रश्नसंस्कृत कोता है तुम सन् देवता सोले के फतेन मत्यापन को उलाइचर सर्पराज वातुचित्री रस्ती से लयेटकर मधानी बनावर हैंगों संस्ता होकर कीतासूचने मणे २० १२ तो तिसस संसार हो मात्रा लग्नीजी उत्पन्न होंगी तिस्ती से तुम स्व मत्यास काराना निस्तेदेह छोजावोंगे २२ कच्चचकर से में सनकोर पर्यतको जारा

क्टाच्यात भाषा । २५ पद्मपुराच नामा । वस्ता ऐसा कहका विष्णु भगवागुओ व्यन्तर्वान होगये तथ सब देवता ब्योर व्यसुर समुद्र के मानेके लिये जातेभारे २३ ॥ को ब्रीमाने महाराणे प्रकारते वहस्वपतीयोगोनामामोण्यायः ॥॥ ज्ञां अभ्याम शीरसमुद्र का मधन वर्शन 🛭 सुनती बोले कि है शोनक ! तब गन्धर्व कोर दानवेंसमेत सब देवसमह मन्द्रशंचल को उत्थादकर शीरसमुद्र में केंश्रेत भये 9 तब समातन, श्रीमान, तथालु, संसारके इंश्वर मनावान कव्यप-रुपसे पर्वतकी मृतको पीठपर लेजेते भये २ व्यार व्यननार्जासे ल-पेटकर देवादिक सब हुन्य के समुद्रको एकादरशोमें मयते नये मयने में प्रथम कार्जकृट विष निकलता भया तव विष को देखकर सब भागते भये तो तिनको भागतेष्ठए देखकर महादेवजी यह बहते भये ३।५ कि हे देवसमुहो ! तुमलोग विषकों मेरे हाथ में करों में श्रीप्रक्षी कासफट महाविष को निवारण करूंगा ५ ऐसा महादेवजी स्टब्द स्टब्प में नारायवाओं को ध्यानकर महासंशको उम्रारण कर भयंकर विषक्ते पीलेते भये ६ तो महामंत्रके प्रभावसे महान् विष वश्व जानाभया जो समध्य हरिजी के धान्यत, धानंत आहे गोबिन्त इन तीन नामोंको प्रयत होकर महिन्ते जपताहे और तीनों नामों के पहले कों कोर कम्तमें नमः यह उद्यारग करता जाताहै तिसको विषमीन अभिनेत उत्पन्न और मृत्यसे वर नहीं होता है ७। = तदनन्तर प्रसन्नमन होकर देवता श्रीरसागर को सधनेलगे तो बा-लश्मीजी उत्पन्न हुई जिनका कालामुल, लालनेज ८ रूखे विगल बाल और जस्ती देहको धारेडुई थीं ये सहमीजी की बहन ज्येष्टा देवताओं से बोर्जी कि मुखलो क्या करना चाहिये १० तब देवता दुःख का वर्तनरूप तिन देवीजी से बोले कि है ज्येष्टे, देवि ! जिन म-नुष्यों के घरमें लढ़ाई वर्तमान रहती हो ३३ तहांपर स्थान देते हैं ज्ञान से युक्त होबन वहां बसो जे मनुष्य मुंठ व्यार निमुद्द बचन बहुते हैं 5२ क्योर संप्याम मोजन बनते हैं उनके घरमें वाला देने

वाओं नम टिको और जहांपर मंड, वाल, भरम, हाड. तथ और यं-गार रहते हों १३ तहांपर निस्संदेह तन्हास स्थान होगा स्वीर जे व्यथम मनुष्य विना पाँच भोथे मोजन करते हैं १४ तिनके घर में तःस्त क्योर[्] टाक्स्टिके देनेनानी तम सदेव स्थित हो धीर वाल, नमक ब्योर ब्यहारों से जे दांतधीते हैं ३५ तिनके घरमें दास देनेवासी नम लढ़ाई के साथ सर्वेय स्थित रही और ने क्यम मनव्य अवाक क्योर शिक्ष बेलको लाते हैं 95 हे पापकी देनेवाली। हे ज्येद्रे। तिसके धरमें नमारा स्थान हो जे पापनशी मनष्य तिलपिष्ट, ब्यलान, गा-जर पोलिकारल कलंबक स्मीर प्यानको लाते हैं तिनके परमें स-म्हारा निस्संदेह स्थान होगा १७। १८ हे च्युने ! जहांपर गुरु. देवता बाँर व्यतिथियों का यज्ञ और दान न हो और वेदकी प्वनि भी जहां नहीं हो लहांपर सर्वेष स्थित हो ९८ जहां श्री परुषों में लढाई, पित भौर देवता थोंका पजन न हो और जेवे में रत हो तहां स्टिंग विकार हो २० जहां पराई की में रत, पराई हव्पके हरनेवाले हों चौर ब्राह्मण,सरजन चौर उद्योंकी पूजा न होती हो तिस स्थान में वाय ब्रोहर तारिकाकी देवेवाली काप सर्वेच स्थित हों २५ इस प्रकार देवता समझी जडाई प्यारीवाली स्पेशाजी को जाहा देकर फिर पढांच चित डोकर क्षीरसमझ को मधनेतारी २२ ॥ र्शन क्षीताचे प्रचारमधी क्षामस्टे मनगौनकर्तगरे स-मुद्दम्बनं नाम स्वकोऽधावः । ॥ दशको ऋध्याय सत्तनी योले कि हे शॉनक ! तब ऐरावत दायी, उपेश्वमा पोडा. धम्बरुतिर वेदा, कल्पहात, सरनि गळ और अप्सरा खादिक निक-वती मह १ तदनन्तर टाउरी में प्रातःकाल सम्ये के उद्दर्शन सब लक्षमाँ से शोभित जीनहालक्ष्मीजी उपना होती भई २ तप प्रसम हर देवता तित उदादेवी, धर्मको माता, सब प्राची और श्रीकृत्य

जी के हृदय में स्थानकाशी लक्ष्मीजी को देखते भये ३ तदनगार

जरुमीजी के माई चन्द्रमा व्यवस से उत्पक्ष हुए व्योर मगपान, में। इसी संतारको पत्रिक करनेवाकी तुलारीजी उत्पन्न हुई ४ तम परि-पूर्ण मनोद्ध्य होक्त देकता तिस पर्म्यत को पहलेकी नाई स्थापित पूर्ण नगरत्व करूर क्ष्मण तरा उत्तर का पट्टान आहे. बर लक्ष्मीमाताओं के पास चाकर स्तृतिकर उत्तम श्रीसृत्र की पर वरभागताओं के पता ज्यापर स्तुतिकर उत्तम आसूक की प्रपत्तिकी प्र तहमन्तर कामी देवी प्रस्ता होक्स सब देवशाओं से मोर्डी कि देवसा देवलाओं | में वर देनेवाली हूं वर मोर्गा तुम क्षोपोंडा बारमास हो ६ तब देवता योजे कि है कमने देवि ! हे सब क्षोपोंडा बारमास हो ६ तब देवता योजे कि है कमने देवि ! हे सब लानाका बरूपाच कर तु एक प्रवास पान एक र पानका प्रपाद है। सार्व की माता भगवान, की प्यारी ! क्यापके विना संस्वार शून्यके आशी है। रहा मंत्रिये ७ इस अकर देवलाओं के कहनेपर गारायकारी की प्यारी महालक्ष्मीओं देवलाओं से बोली कि इस्सेसमय में से सब शः प्यारा भहालस्थाजा दयताच्यात बाला कि इसलामध्य में अस्य प्रातियाँ के प्रातांग्वं शता करती हूं - तब नारायण व्योगमन्, शेल, बला, ग्रदाबे धारत करती हूं - तब नारायण व्योगमन्, शेल, बला, ग्रदाबे धारत करनेमाले, श्याल, हिसार के इंश्वर, भगाधान, सहराक्षेत्र प्रहार होगये ८ तो हाथ जोड़कर शहदकाची बोलते हुए वृंदता लोकों के स्लामी के प्रणाम वह स्तुतिवार बोलतेमये १० वृंद् व्यक्ता वाजा क रायामा क नायाम कर रायुरावार कार्याकाच १३ कि है किरजुरी। माता, व्यावधी प्यारी, धाल्यमामिनी त्वस्पीती की कारा सारा की रक्षा के विजये प्रष्टया कीर्वित व्यवतक भगवान म-विज्ञा नहीं करहेमचे त्वतक त्वस्पीतीडी हरिजीसे बोर्सी १९ कि हे मध्दैत्वचे मारनेवाले ! हे माथ ! उपेष्ठा प्रालश्मीजी को पिया न वर हिन्दी जोटी बहन मेरे वेंसे विचारकी जाप इच्छा करते हैं ज्येष्ठाके रिश्त होने में जोटीबा विचाह नहीं होना चाहिये १२ स न्नाठक एत्या वाया व प्राचान क्यार व्याप्त वाया १९५५ तथी बोले कि है शीनक वे वायमीनी के व्याप्त मुलक्त स्वित्य देवताओं सादित कर के वयमके अनुरूप वेदारा से उद्दालकरती को देवेमये १६ तदकरूपर श्रीमान नारायखनी जरुमीजीको स्वेतीकार प्रभाग 12 कार्याप्य आर्थन नारावणी करणांकी कर्णाकीन स्थानिक स्

के बर्तनमें कासूत परिवेशक करतेमये १८ है उत्तम बाग्रक ! जन-तक राहु मी ब्यम्त मोजन करताभया तन चन्द्रमा ब्यॉर सुर्प यह कहतेनथे कि यह रास्त्र बल से ब्यागण है ५६ तन जगलायजी क्रोनित शंकर उसको सोने के वर्तन से मारतेभये तो उसका दिर प्रप्ती में विशवर केतुनाम होजाता क्या २० तदकतर अयसे वि-क्रज होकर राष्ट्र बोर केतु शीधतासे प्रतेमये खोर इस समयमें भी बह दिन प्राप्त होने में ये चन्द्रमा और सर्व्य के उत्पर कोप करते हैं वर हुन आत वार न न वार्यमा वा सर्व को बास करताहै तो वह क्षण र र तत स्थान २६ - ज्या व र र मान होजाता है स्वीर झा-वर्तन होताह सब जल तो गंगाजी के समान होजाता है स्वीर झा-बुधान काराक अने जन साम कारा बेतकपासकी के समाज होजाते हैं २२ जो वायस तीये में स्नान करताहे यह गंगाजी के स्वानके फलको प्राप्त होता है और करोड जन्मका इकडा दान नारमधित पुचपवाला डोजाताहै २३ जब-समेत पाप नारा डोजाताहै किर करावों पत्तों के बरनेसे क्या है वि वार्थी विद्या को पुत्रकी इच्छा करनेवाला पुत्रको २५ और मोलकी इन्ह्रा करनेवाला मोलको पाता है और निरचव मंत्रकी सिवि हो-जाती है हे ब्राह्मण ! यह तम से समृद्र का मयन मैंने कहा २५ ॥ श्रीचारो महात्रकाचे नक्षात्रकाहे स्वयत्रीनकाहिकसंबादे सहस्रवनं साम दशकोऽध्याकः १० व ग्यारहवां ऋध्याय सामीजी के बृहस्पति के बतीका वर्णन है श्रीतकती बोले कि हे साक्षल मगजान के स्थमप वेदण्यासजी राज्यका बाज एक ६ पास्त्रम् प्रत्यक्त कर प्रत्यक प्रत्यक्ति के है रिक्ष्ण | टे व्यक्तिस्परित | दे सुत | दे महाप्त्र के उपल हवा के रोजाने | डिक्सरे की सुरभा और शिक्सर पाषिनी और ध्यावन हुनेगा होतों दे यह मेरे सुनन्त्रेश इन्कार्ट प्रपाप से कहिये ११९ की ह बाग | हे ताचीका | शिक्सरे प्रति की प्यारी, रुपवती, नेजों की

अमतर होती है जोर किससे सक्सी उत्तक होती है पर नी मुन्नसे बहरेय ३ तब सुतनी बोटे कि है वित्र, योजर ! सपि पह चेरित पुश्यकारी जोर परम हर्जन है तथापि संक्षेत्र से विश्वन . से तुमसे कहता हूं सुनिये ८ हायरयुग में सौराह् देश का बसने बाला, बेद बेदांग का परमामी अदभवा नाम राजा हुआ है ५ और तिसक्षे सुरतिचन्द्रिका नाम स्त्री हुई है तिसमें राजाके म-मोरम सात पुत्र हुए हैं ६ ब्योर सुन्दरी, सत्य बोलनेवाली, स्पामा-बाला नाम करया हुई है यह करवा पिता के प्रीति करनेवाली हुई हैं ७ तदनकर एक समय में स्थामवाला मुद्दः मभोदर, रहरूप सिप्पों के साथ सानंद से सुन्दरवर्षनाली मानुष्यों में लेखने के क्षिये = प्रम बुर्लभ कृदंव ग्रहको नीचे जातीगई खोर इसी बमतर में संसार के तारनेवाली लक्ष्मी जी ८ मनुष्यों के नीति देनेवाली. पश्चित, अंगपुक्त, महाराशिक रूप धारण कर ब्यावही प्याती गई १० ब्यार सब ममुख्यों के शिक्षा देनेवाले राजाके नाशके विना किस बारवस्त शहा के घरमें इस समयमें जारू 33 यह मनसे विन्ताना इर राजाके स्थान को जाती भई जो स्थान कि सोनेकी भीतियों से युक्त प्योर पताकाओं से प्यलंकत है १२ वहांपर सिंहहारको नांच कर हारपालन करनेवाली से बोली कि हे हारमें निपक्त, रामलक्षप

कु बार देखांचे में बाबहुत है । वे पार्ट मारियान अप कार्यों क्रियों क्रियों कर में हैं 1, में मुर्तियों क्रियों के स्थान के स्थित है । के स्थान के किए मार्ट में क्रियों के स्थान पर मुक्त मार्ट मार

एक दिन स्थामी हो पीचित होभर इस व्यक्तियों की ने पति से

चतर्थं इदासरह । न्याप अवस्थात । सहाई की थी २० भीर वास्त्रार रोक्ट घरसे बाहर निरुत्त गई थी तिसका रोगा मुलक्ट में विसक्ते पार काई हूं २९ उससे सम उ-साल को एटलर श्रेष्ठ जनकों में उपदेश दुंगी २२ हमारे उपदेश में वह भी बाजन्यमें क्षेत्र जनको कोगी निसके प्रसादमें हे हारके पालन करनेवाली! वा मुख्युक होगी २३ कमी यह बेस्पक्रत में यतन बर्चनकरी जि. मुख्युक होगी पूर क्यों यह स्वस्तुक में उत्तरक होगी पहिले काम प्रकुष के यो भाग हार्म दे तम स्वाम प्र करविशादे दूनले तेतीके लिये पूर प्रगू व्यक्तात्वकी में च्यद ब्यू-दिन हार्मी को भाग कर व्यक्तात्वकी क्या के स्वप्रदूष प्रभाव हार पूर असको प्रमाणी कीयों हो बोध्युक जोहे के हुए हा हाथ्ये केंद्र समाजार केंद्र कमाने कीयों के लिया देवा स्वाम की क्ये पूर उत्तर्ध व्यक्ता कीयों की प्रमाण हा हा हा, पक ब्येट साझ के बाल करनेकों के तेने के लिया प्रसा हो है प्यों पूर भाग राषे तब लक्ष्मीटी हे इस महातमा स्वप्रकारा व्यक्ति २०० र्वज्ञर्य को बारकर राजहांसपक रथ में उनको चढाकर सदसा से व्याकाशमार्थ्या होकर सहयोजी के पुरको जाते भये २८ जितने बार नामध्यामा शब्द राज्याचा क पुरका जारा गर्य रहा जाता वाह वैस्पाने क्षेत्र जल को दिस द्यात में किया है तितने हजार करप सदमीजी के पुरमें दोनों रियत होतेलये ६० फिर शेष पुरसके भोग के लिये इस समय में राजाके बेरामें दत्यक हुण्हें राज्य की सन्यति से गर्जित होकर प्रतरों इनहों ने विसार दियांडे विससे में राजीफो नितरी समस्रे उपयोगाने लिये प्यार्थत ३३ सब टाल्या (बारके रखा शिक्षा सबस्य उपयोगके निये ब्याई १३ जब प्रशास (पाएं एक्स एरंग्येट) हो होते हैं वह वहीं किस मिले किए मार्गिय में यह मुख्ये करें पोर किस होटान्ये द्वार होता है है २६ मार्गः ! यह 'हुता हुई मुक्के एरंग्यू कर के ब्या प्रशास तम तक्षा में बात्री कि हो पोर्च ! (इसकी क्या प्रत्येवार्ध) आर्थित करिने के राज्यों के हा पोर्च ! (इसकी क्या प्रत्येवार्ध) आर्थित करिने के राज्यों के स्वार्थ के ब्याई में इसकी क्यां ते करिने हा प्रार्थ के स्वार्थ क्यां करिने क्यां में इसकी करिने करिने हा प्रशास के के पुजन करें १५ है है ब्यूच है उसके करिने करिन स्वार्थ के स्वार्थ करिन के पुजन करिन हो एरंग्येट स्वार्थ करिन हमिले करिन हमिले प्रदाशक गांग । अंदों सोमें में मुदित है दि मिणावीकों पार्ट कर्मी रेखें । जैसे बार प्रकार में माणावीकें प्रमुख दिश्य होगी र द है हंगों। इसमें देखें हैं में क्यार दिशा में प्रकार कर्मा स्वीति कर नामन-प्रकार में नो है क्यार क्यारों माणा स्वात कर 20 प्रात्ती केंद्र अस्तावक देखेंग्र करानी स्वातीकों से सामन कर 20 प्रात्ती केंद्र क्याराज ने क्यार करानी माणा कर्म कर 20 प्रात्ती केंद्र हुए प्रकार केंद्र करानी कर क्याराज कर क्याराज कर क्याराज द प्रकार क्याराज कर क्याराज क्याराज कर क्याराज कर क्याराज कर क्याराज कर क्याराज कर क्याराज कर क्याराज क्याराज कर क्याराज क्याराज कर क्याराज क्या

बर १% वीसार बुहर्ज्यक्र दिन शहरसंख्य देश आर मार्ग नि हेदन कर बोर चाँची बुहर्ज्यति में राज्यक शानिकशासी से मा-हेदन कर बोर देश है देशों का दरव हाथ में देशेवाली ! यह से लामी देशे को प्रसार कर उनकी प्रीतिक्ष जिये माहायों को मन से लामी देशे को प्रसार कर उनकी प्रतिक्ष जिये माहायों को मन से एकन कर १२ करावे, गहाने, भोतन और माहायों को मन देशे तुक हारणुकाबियों बोर्जा कि दे मायमा श्रेष्ठ गहा है। स्वाय प्रतिका द्व तर प्राप्तवाका नाम कि नापक संदेश करूर जापके कारो में सरतिपरिद्वा रामी से जाएक संदेश करूर जापके े चर्नमी ब्याय कोच न करना ऐसा वहकर वह श्रेष्ठ कंगवर्ल का प्रयासिकी रामी के पास जाकर ४३। ४५ शिर में बंजिस भा हारणशास्त्रा शना के पाल जाकर ४२ र वह रहते में जाता है के इस जो सहमीती ने कहा था उसको ब्यादि से जनसङ्घ सब सुर किलविका से कहदिया तब हारणांजी के बचन सुनकर रामी ४५

ार ना अप स करावना तम कार्यांका के पास जाकर बोली कि है हुने इस सम्बर्धा, गर्वसमेत, आहासी के पास जाकर बोली कि है हुने हर तुन्दर, गलतमत, मकाला क का जाका का कि है है इसहरि । ब्राय क्या उपहेरा करने के लिये चाई हैं 89 व व माहराव । काथ बचा उपदरा फरन क राज्य आह ह ४७ व छोड़क्त सुखपूर्वक बहुत बालतक मुमस्ते कहिये तब प्राप्तावी बोर ध्यानक त्यानुष्य बहुत स्थानक मुम्मस् बादण तम् मामाण विस् हि दे दुष्टे देने कालीद देशकर पंचाय में जानेची प्रचा करती परम दुर्गोल मान तुम्मने मार्गि क्षेत्री जानमी के दिन जो प्यश्चा करता है 5-12 एक व्यक्ति मुक्त स्थानीमान्युक्त कर्मा स्थान में देशा दें ये मामाणी के जाना स्थानक परमा क्रांक्षेत्र जाला नेव ने ४० व्यक्त सामाणी के बातना स्थानक व्यक्त स्थानीयों होते मार्गियी मूर्गों थे 3 नुक्तनार तार्मीक्ती स्थानमाना सेनाती हुई मार्ग्यी

रोने हे शहर के सनकर उनहें समीप साहर बोखी ५२ है है है

चतुर्थं ब्रह्मसम्बद्धः ।	78
तुमको इस प्रकार वर व्यथा विसने दी है वह मुक्तसे	हती सब शिस
के प्रचन सनकर शोकसे गद्रद नाशी से ५३ नश्मीत	सब इसान्त
क्रमति भूगे के श्रेष काराया ! तब प्रयासादाता परम त	र्जन बन सन
बर ५५ शासको नहीं हुई विविसे अशा जोर महिन्	छ होकर सत
बरने लगी अब तीन बार पूरे होगये और नौधावार प्रा	त होगयाप्रप
तो सहमीजी के प्रसाद से विवाहकर्म सिक्ट होगया	श्रीसिदेश्वर
देवराजा प्रत्यन्त तेजस्यी के प्रश् मालाधर नाम्	मुम् स विवाह
हुन्या तब मालाध्रस्ती स्थामात्रालाको लेकर घर चले	गर्व सदनन्तर
तिसके जाने में कोतुकको सुनिये ५७ वे जावाय ! स्	नार्थ घरम ब-
हुत सी द्रव्य स्थित थी यह सब नहीं जानीगई कि में सब रामी द्रव्य , बढि, चीर चल मोर कपड़ोंसे होने हैं	न लगप प्रव
सब रामी द्रवय, बाद जार जन बार क्यवास हान इ	विकट बठा सा
व्यवनी कृत्याके घरका ४८ कुछ माँगने के लिये व्यव जती मई तब राजा तिस मालाधर के नदीके किनारे	पालका भ-
जता भद्द तब राजा तिस मालाधर क नदाक कानार कुड बाल में कप्टसे प्रवेश करते गये तो नदी में जल	All H GO
कुड़ करन में करत प्रवश करत गय ता नदा में जन श्यामाबाला की दासी ज्याती मई च्योर उन्होंने कुरायु	लग का लाप संस्थित किय
हुश्वामां भी के हैं है ते पूजा ६१ कि मांस रहने हीन, स	es apra ana
बालवाले तुम होन हो और कुटोंसे पाये हो यह सब	र अधिक संस
त्रवालवाल तुम कान हा जार कराना जान का पर सर तब दरिद्र मोले कि हे दासियों ! में श्यामावाला का !	वेश हैं सीराइ
मगरसे जाया है यह सब हाल स्थामायाला है पास ज	कर तम लोग
बहाना ६३ ये तिनके वचन सुनक्त केंत्रहलपुक स	वासियाँ प-
कारण समाप्तर केंग्राचन कारणे कारणे कारी गर्श ६५ मा	र स्यामाघाला
स जारह सब उत्तान्त बढातव वातराना न व व स्थामाञ्चला सुनान्धित कुलोंके तेल, सुन्दर कपड़े, व बीरी ब्योर घोड़ा देखर मोक्से को फिताजी के पर	रन्दन, पानकी
बीको कींग्र फोटा टेकर बीकों को पिताओं के पत	त भेतती भई
कारके मध्यम के सम्बद्ध अवस्थानाओं संबंधर को स	ष्यातं भये ६७
च्च प्राप्ताकाच्या चारिकारोचे श्रेष विज्ञानीयरे घीसमंत	शाली प्रसंध
होनये तब स्थानावाटा पिता को विषे हुए बर्तन	म स्थित धन

्राच्या के स्थाप के प्राप्त के

पात्री केंद्र मार्थ के प्रयोग में 20 मा प्राण्याना के रहते हैं। प्राप्त मुक्तिपंत्रीय केंद्र केंद्र मार्थ कर्मा की किस प्रयान प्राप्त मुक्तिपंत्रीय कर्मा कर कर किस किस क्षेत्रीय कर कर किस क्षेत्रीय केंद्र रुप्त प्राप्त मेंद्र क्ष्त्रीय कर कर किस क्ष्म क्ष्त्रीय केंद्र प्रयान क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्री क्ष्त्रीय क्षत्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रिय क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रीय क्ष्त्रिय क्ष्त्रिय क्ष्त्रीय क्ष्त्रिय क्षत्रिय क्ष्त्रिय क्ष्त्रिय क्ष्त्रिय क्ष्त्रिय क्ष्त्रिय क्ष्त्रिय

चित्त डोस्ट महिसी सनता है तथ वह सब पापों से सटकर जवसी

विके लोक्की जातार कोर जो इस अतकी कथाको न सुनकर जत कार्यो है तिसके बतका फल निस्सन्देह नारा होजाता है हुई ॥ इति श्रीपाचे मद्रापताचे बारताच्छे सतावीनाध्यंत्राचे वास्तवाने स्वावः १० ॥ वारहवां ऋध्याय

शोनकती बोले कि हे सत्ताती ! स्वीर किस पुरुवसे पापरहित स्थानक नाय एउ त्यामा । जार प्रकार उत्तार प्रशिक्त होक्स महत्य संगक्षन के स्थानके जाताहै पह क्षा करके कहिये 9 तब मृतर्ती बोर्ड कि है उत्तम माहाय । जो महत्य माहाय के धन या प्राचीस प्रत्यों की स्था करता है यह बिनयुक्तीक को जाता है २ पूर्व समय डायरवृग में पुजरीन, वलवान, वेध्यव, यहा कराने-ह ५ ५६ संस्थ डज्याजुर में पुजारान स्वयाग्य, पांच्य, प्रशिक्ता हार्च होताना राजा डुब्या है ३ एक समयमें यह क्सताकुक राजा माहत्वमुनिते पृजातम्या हि हेदयक्ते समृद्ध, मुनियोमें राष्ट्रवेक्य! विस्न प्रवस्ति निरंपय पुजाहोगा यह मुन्तते कडिये मायकी व्याहा कर्रमा जिन मनुष्यों के पुत्र नहीं होता है उनका जीवन निस्पेक होताहै २।५ तब गालवमुनि बोले कि है राजन ! जो तुमने प्रा हातात्र ४ । ४ तम गायानमुगन नाया एक र राज्य । का शुःस् हे तिस पुत्रकी उत्पत्ति हे कारण को में संक्षेपसे तुन्हारे ब्याग कह-ह ।तत पुत्रबर उपराच के करण का न तता ता पुत्र । ता है पकाप चित्र होवर मुनिये ६ हे श्रेष्ठ राजा ! नरमेथनाम यहा ब्रीजिये तब सब कक्षय संयक्ष गुब्हारे निरुचय सन्तरि होगी ७ तब राता बोले कि हे ब्राह्मण | हे मुरो | यहाँ में ओए, महायह नर मेथ केंस्र मनुष्यको लाकर करूमा यह व्हारेथे = तब गालक्म्मि

बोले कि सुन्दर काम, सुन्दर सुख और सब शासका जाननेवाला काचे पुल्यों जो उत्पन्न हो वह यहके निये समध्ये होगा ६ काम हीन, सत्या नहीं, मूर्ल योज्य नहीं होताहें हे बाहत ! गालवनी के इस प्रकार कहनेमें मनुष्यों का देश्वर वह राजा १० मुनिओं क बचन रह कर दुर्तों को भेजता भया बोर सब शास्त्र के पारगामी माश्रव इत्पादिक ब्राह्मणों को बहुत इत्प्य देशर यहा करानेब लिये सराव करता स्था तदनन्तर राजा की व्याह्म से दूत देश देश की सरो देश। ९२ और एकामिल होकर गांव गांव जीत शहर में पहुँच सारावण । १ देश देश मा स्वारं में में प्रात्त के स्वारं में में प्रात्त के स्वारं में स्वारंग में स्वारं में स्वारंग में स्वारं में स्वारंग में स्वरंग में स्वारंग में स्वारंग में स्वारंग में स्वारंग में स्वारंग में स् भार बच्च जीनेक्की बार एनं बारिय है, इस राजने हिन के हिं है है सक्सर (प्राच्यां का रोजन सुनिय राजा हुए जा दी जाई हिनां है के स्थार राज्यां के स्थार हो कि स्थार है । असार बार्क है ले किसे राजा उपरोक्त के स्थार है । असार बार्क है के लिसे राजा अस्पार्क हों की स्थार है । असार बार्क है के स्थार है एक्सर के साम क्रमा है । असार बार्क है के प्राच्यां के स्थार है । असार काइ मार्क हों के स्थार के स्थार है । प्राच्यां के स्थार है । असार काइ मार्क हो के स्थार है । प्राच्यां के स्थार हो । असार काई हो हो के स्थार है । प्राच्यां के स्थार के स्थार के स्थार हो । है किस स्थार के स्थार के स्थार के स्थार है । है किस स्थार के स्थार के स्थार के स्थार है । है किस स्थार के स्थार के स्थार के स्थार है । इस प्राह्मश के पालक को बोहकर मुम्पको शोपकी ले चलो यह इस १००२च क अध्यान जा १००३च सुरात है। बालक ठवमहें ४३ इसने संसार में जन्म पाकर मूख नहीं पापा है इससे यह डेंसे मरेना ४२ हे दूतों ! धरसे इसके ध्याने में इसके माता पिता दुःसित और माग्यहीन होकर निरुपय यमराज के स्थानको जानेंगे ४३ इसप्रकार मृनिके वचन सुनन्दर दृत ब्राह्मस से बोले हि हे आज़रा | हे कुंदिमान| दीननाप राजुकी निना जाड़ाके तुम्त रख के हमलोत केंसे के अली इंसप्रकार वे दूत वडकर तिस समय म राजाकी पुरीको चलते क्ये ४२। ४५ तब मुनि दूरसमृती है साथ यह

क स्थानको गये तब दूत राजासे जासको हजानको कहते गये १६ तब राजा श्रेक्ष युक्त मन होक्स मुनितीसे ये बचन बोले कि हे मुने ! हे बहुत्ता ओवलि के किना मेरे यहां करने में पुत्र होये तो बाह्मणकेपुत्र ६ नालारः, वा त्रास्त्रं का नगा गरः पदा करणम् तुत्र दावरा आसणकपुत्र को क्षेत्राद्रये ५७४३= तय मृति बोले कि हे सजत् ! तम्हारे यहा करने को किया है। उपार्ट जा महिन की में है पर होता है जाएं है जा महिन की साम किया है जो है जा है जो ह स पुत्रक पुरस्का कन्यवस पराया वास्ता प्राप्त कर ५७ प्रिय बोलनेवाले बाह्य उनसे बोले कि हे मुने प्रशास कर ५७ प्रिय बोलनेवाले बाह्य वास्त्र विले हे मुने स्वापने हम दोलोंको जीवदान निरुषय कियाहे ५० तिन दोनों ये बचन सुनकर दया के समुद्र मुनिजी तिनको प्याशीयाँव देकर श्रपने स्थान को चले गये प्रश् फिर महानाग मुनिजी विष्णुजी क्याने राज्य को चले मां ५ १ है कर महानामा मुनिजी हिंग्युजी कें परमान्द्र को हाथ में आज कर देवाताओं को मुंदेश तुरस्या करते गई द हिंदू जुल कारके वीताने पर तिसर राजके दुक होगा मचा जो कि सुन्दर और हम तक्कार राज्य के दिक्त हुए जो की सी सीरसमूझ में महाना हुमा देता करता मुक्के दुक्त को भी की दिक्त हुए जो हैं पीरत होश्तर केंत्रिक उत्पन्न हुक्के देवताओं की मार्च पूर्ण हों भी में करते भी-जी मार्च पर जो कर मार्च में प्रसान मार्च कर से भी-जी मार्च पूर्ण हों भी मीर करते भी-जी मार्च पर जा देव कर मार्च में प्रसान महत्त हुए दे वह दिस सीटने से दुने न विश्वुजी के मीरियरको जाताह जो बढ़ी पर मिने इसके पदने वा जायन से कथा को ६३ व्यास्पानार स एक्ट्री स्त्रोक हैं वे वित्यानी के मिन्दाचे जाते हैं हैं हैं। प्रेर्व केवल कारण के प्रकारिकारिय कारण कारणकर्त मूल अपनी-जागः ॥ १० ॥ संस्कृता व्यास्पानी केवल कारण कारणकर्त भागाना केवल कारणकर्ति कारणकर्ति । भागाना केवल कि सामाणी के नामा स्वर्णी ।

ष्टमीके उनाम माहायम्य को कहार माहायम्ह दे उदार की त्यांना स्तराजी कोले कि हा हिंद हुए सम्प्रमु को माहाय महिने दे उतार समाराजी कोले कि हा है है सम्प्रमु को माहाय महिने से क्या का समाराजी केला के समाराजी व्यावकाल कुलाने कुछ केला का समाराजी के सामाजी करायों के स्वावकाल कुलाने कुछ केला का स्तराजी के सुर की प्राप्त दोगालें र है उत्तरमा स्वावकाल कुलाने का सोमाबाद में श्रीहिणीत्यास संग्रह का स्तराजी का सामाजी करायों है का

बाली है ६ जो महायायों से युक्त होतर भी उत्तम वत को करताहै वह कारत व. या नवानाय त जुक वत्यर या वत्य भत का अस्ताव यव सम्प्रापों से इटकर व्यन्तमं हरिजीके स्थानको जाताई ४ जो व्यवस मनुष्य कृत्याजन्माष्ट्रमी को नहीं करता है यह इस लोक में दशका त्रात होकर मरकर गरक को जाताहै ५. जो मुख्यें की कुण्य जन्मायुमी व्यतको पर्य वर्ष में नहीं करती है यह मयक्कर नरक में जाती है द को मृत्युद्धि मनस्य अस्याएमी के दिन में भोजन बस्ताहै वह महा-मरक को भोजन करता है यह में सावही साव कहताहूं ७ है महा-बुक्सिमान् ! पुर्वसमय में दिल्लीय ने सन पाय नारा करनेवाले जनके ुंटिकेट वरिष्ठती से पेकाया दिल्ली सुधिये = दिलीय बोले कि मुने | मार्देश महीनेकी कृष्यपक्ष की चाम्बी जिसमें जनावेन भगवान् उत्पन्न हुए हैं तिसके में मुजनेको इच्छा करताहूँ बहिये ध ाराच्या ००१४ हरू व श्वास्थ म सुननश्च ब्रन्था करताहु कहिये है. श्रीत, पक चौर मदाने क्षारण करनेवाले भगवान विन्युजी देव हैं के देवमें कैसे क्या करने और दिस्स देतु से उपक्र हुए हैं ३० तब ब्रिसिहती बोले कि है सम्मन् स्कामी हो दक्क जनाईन ही हेसे ए विधी में उत्पन्न हुए हैं तिसकों में कहताहूं सुनिये ११ पूर्व समय में पुरुषी बंसादिक सजाओं से पीदित व्यवने अधिकार में पटवाले

पश्चपुराग भाषा । दुशसे साहित ९२ फूलित नेश होकर रोती रोती वहाँ गई जहां नेनोंके स्वामी पानतीजी के पति रूपण्डन महादेवजी स्थित थे का उपाय रचना चाराव महारचना उ च च च चुनावर कारते हैं तहां श्रीरसागर में जहांपर भगवान शेषजी के ऊपर शयन करते हैं तहां के जाते के लिये कहकर हंसकी पीठपर चटकर हस्ति। के समीव काते अये १७1 १८ प्योर यहां जाकर बस्तनेवासी में श्रेष्ठ बहारती महादेव कादिक देक्सकृति पुक्र होकर कोमल वाधियों से स्तृति करते अये १४ कि है संस्मीकी के काला ! कमलनवन हों। पर-रिनकी स्तृति सुनकर जनार्दनजी क्रेशपुक्र मुख्याले सब देवताओं से बोले कि व्यापलोग किसलिये व्याप हैं २१ तब ब्रह्माजी बोले कि ातनक द्वारा पुनक कार्याता किसलिये ज्याय है २९ तब ब्रह्माजी बीखे कि है देवताओं में श्रेष्ठ जनकाथ देवलोकशावन ! जिससे हमलोग ब्याय हैं तिसको कहताहूं सुनिय २२ महादेवजी के वर देने से डम्मच दुरासद राजा कंस है तिसके हाथ क घात स ४५०। ताकृत ब्रोकर पीडित हुई है २३ कंसने महावृष्णीस बहाया कि हे शेमी !

। विना भारत करा करण कर । तमे महादेवजी ने यही वर दिया था २ थाप गोडुल में जाकर दुरासद कंस के मारने में जन्म लेकिये २५ ब्रह्माओं के कहनेसे भगवान महादेवजी से

म जन्म लाभिय रूप महाजा क वहनतः नगवय्त्र महाव्यवा स् बोले कि देवों के रागामी महादेवनी ! पार्तनीजाते वो दोशिय ये साहत भर रियत होकर चली व्यावंधी 'रेट् तत महादेवजीने पावंती को दे दिया तो पावंती रहाके साथ शंख, चक्र व्यार गदाके धारण क रनेवाले भगवान् मशुराजी की वाजा करते सथे २७ स्मीर बहांचर

दाधरजी देवकीती के पेटमें जन्म जेते भये और समनयनी पा जी जी पशोदरजी की बोलि में स्थित होती भई २० नवमास ज्जा का प्रशासना क कारत मार्ट्स करा कर रू मार्थास स्रोर नगीरन कोलि में रहकर भार्दी के महीने के कुप्खपक्ष की स्ट न्यार प्रभावन प्रभाव म २०५० प्रथम क प्रधान क क्रान्य क क्रान्य क क्रान्य का क्रान्य प्रमी तिथि २६ सेव्हिकीनक्षत्र यक्त, मेघोंसे गर्जित प्रवे राजि में बंस क वेरी, संसारके स्वामी वस्त्रदेवती के पत्र उत्पन्न होते भये ३० ब्लॉर म नरम, सरसारक रामामा प्रकृतका कपुत्र अलाव क्या पत्र रूप अस् सन्दर्जी की सी वेराटी बशोदाजी कम्याको उत्पन्न करती भई पर्रा हाथ में लेनेवाले, कमलनपन, पदानाम पुत्रको ३९ देखकर तिस हार्थ म लन्त्राज, कमलनमन, पवनमा पुत्रक हुए व्हरण, तर्तिस समर्प्य स्पृत्रेवजी स्थानलकी सास होग्ये कोर कंस्के डस्से डरी हुई देक्कीसी सिसी सामयम बस्त्रेवली से बोर्ची कि है नाथ | कि स्वस्य स्थाय स्थादाओं के पास जाकर पुत्रको देकर तिनसी सम्या को के काहर्य ६२। ३६ देखकी जी के बचन सुनका दुःल पुरु क्र प्रकार २, १२४ च्यक आफ वचन शुनकर इंग्ले पुरु समुदेवती भी सत्तकस्थे चंदमें लेकर पशोदाजी हे सम्मृतको जाते पुद्दता ना बादाकका व्यक्त वाक्त वसादाना व उन्हादका नात ये ३५ तो तिसकी मध्य सहमें यमुनाजी पदी जोकि जलसे मरी ... १ र हा । तरायक मध्य शह्म वर्गुनाओं पड़ी जाक जलसे भरी हुई, भयानक, महाहीचे, गम्भीर जनके पूर को सेवन बर्शनाती ची १५ इसमकार की पमुनाती को नेशकर उनके किनारे स्थित होकर कुंपलसे व्यापूज वसुदेवजी करपना विगताते रोने जुसे १६ कार पुरस्त जन्म के प्रश्निक होकर में क्या करें, वहां जाउं चीर न म्दर्जी के स्थानको परोदानी के पास केंसे जाऊ 2.9 किर हरिजी की मावासे वंशित विता वसुदेवजी न्यानन्दसमेत होकर क्ष्यामध्य क प्राचीत को देखते हुए किनारे स्थित होका ३८ मोठपर्यंत देखते मये तब इसारकार की पमुनानी को देखकर प्रसास होका जैसे वसुदेव जी उठ कर प्रस्कान करते मये १६ कि मापा करके जनसामजी पिताके कोई से जलमें गिरते वये तिल पुत्र की गिरे हुए देखकर दुःसित वसुदेवजी हाहाग्यर कर १० फिर तिन विधे से क्षेत्रत होकर महोपाम करते मधे कि हे लोकोंक नाम ! हे देव-ताओं में उत्तम ! मेरी च्यार पुत्रकी रसा कीतिये ४१ पिताका रोना सुनकर कंसके वेशे भगवान वारंत्रार क्यासे जलकोड़ा कर फिर चिताजी के प्रवर्म प्राप्त होजाते भये ४२ जैसे तिस कुशसे वसुदेव जी नन्दके स्थानको जाकर पशोदाजीको पुत्र देकर तिसकी कन्या

२... यहे क्षेत्रह ४३ जयने स्थातमें आहर देगकी तो के रूपा है देने भये किर देसने यह डाल पाया कि देवकी तो के कुत उत्पन्न हुज्जाई ४४ तो उस स्टबर्स उसने दुर्ताको पुत्र वा क्रमा लेखी किये गंजा तो वे क्रांक कुरा आवर काचा राजाना आरान करता गर्म । व्योग क्यादेवजी से कन्याको श्रीतकर लेकर कंपनको दे हत्याको केवर राजा कंस हरसहित दससद होजाना भ हुए सोने के दर्श के समान, पूर्व चन्द्रमाने समान गरवताती ४७ क्षिणालीके जाना प्रकाशिक नेपायक हैंसानी हुई किस बल्याको देखका क्स राक्षसों को ब्याह्म देता भवा कि इस कम्याको लेजाबर शिलाब उपर पटक हो ४८ तथ वे चसुर बाझा पाकर कन्न प्रमुत्त भये हो बिजलों के समान शीधनासे गाँगीका जी के समीप चलकर पर केली कि हे घररों में उत्तम राजन ! जहां रा उत्तम राश्र है तिसको में कहतीहं सनिये तुम्हारे नारा करनेवाला नम्बजी के स्थानमें लिया हुम्पाई ५० बीसछती बोले कि हे हिलीप ! इस प्रकार बड़बर वह देवी व्यपने गन्दिरको चलीगई सबसेपीके वचन समग्रह राजा कंस करपण्य द:स्थित हो यर ५ ९ वहन पुतनसे बोता कि तुन नन्दके भन्दिर को जावो और कपटसे हिस पुत्रको उत्तरु चर्ची चारो तुन्नको बहुत बाणिहत ४२ दूंगा है गुने! भरे शह के मारने के लिये कारन्त शिव जावो तब ज्याहा पांचर वह ाहती गोवुल के सम्मुख गई ५६ और मायासे सुन्दरी कप होकर गोरप्टाने प्रयेश करगई खोर स्तन में विष धारराकर मारके हो प्राप्त होनाई ५५ गोपों से घरमें हार में लक्षित होकर प्रयेश कर मीतर जाहर बालह को अध्यक्ष स्वत पिताकर सत्ति को पान-५५ तनतन्तर जन्यानी सन्दासर बलावर्त आदिकों को मर्वनकर कालीयको उमनकर मयराप्रीको चले गये ५६ स्वीर वहां कार करवंस के मारकर कंसके मर्जीको भी जीवने भये हे शासन! पह तुमते ति जाती के जन्मके दिनका बत कहा ५७ इसके सुकते से जप करा होजाते हैं ज्योर करने से क्या होता होता जो मनुष्य वा जी इस मनवानके बतको करता है ५८ वह इस जन्म में २५ नियम, आहल रिक्पांस के आहरी हाताला है। स्वत्यां स्वत्यां राज्यां की, आस और आप से ही बोधा स्वत्यां से प्रतिस्था, बीठ, आपकी, प्यवदानी और पहुन्दीश में स्वत्यां सोशवार वा पुराव में पूर निकार के पार्टी मानता का नहीं सिहता है तथा देखीं होता का निकार की मानता का नहीं सिहता मानता का मानता का मानता का मानता की मानता मानता की मानता की मानता की मानता की मानता मानता की मानता की मानता की मानता की मानता की मानता की मानता मानता की मानता की मानता की मानता की मानता मान राता चित्रसेन नाम हुएहँ जोकि महा वावपरायण, महान, करान्या रामतकर माह्मणके सोने को जरानेवाले, ६६ मदिशमें सदेव दस शासनंबर मात्राज्य राह्य जा जुरानाच्या, वर गाउराण राहर प्रश्ले स्मीर तथा मोल में रत ये इस प्रकार पाप में युक्त क्लियही प्राधियों के नार अस्ताना रता च इस अकर पाप में युक्त तत्वहा प्रापियों के मारतेमें रत होकर ७० चापहाल व्योर पतियों के साथ सदेव वार्ता-लाप करते में इस प्रकारके होकर राजा शिकार रेक्शने में मन घाररा करते मेंथे 99 कर्मी ज्याधको जानकर सब कोरसे बाप्तादित होहर सब क्षेत्रों से बोले कि तुम सब सावधान हो ७२ इस व्याप्तकों में ही मार्ट गा जो ब्लीर कोई इसको मारेगा वह निरसन्देह मारने पोन्य होगा यह कटवर राजा थे मार्ग से जब व्याप्र जाता भवा ७३ तव वजातमेन ताज ज्याप के बीच जानाना ब्हॉर प्रदेश प्रदारके पूरा दु:अ से व्याप्त के मारने में चन्द्रप्रिच करता गया ७५ मूंच प्रदेश दु:अ से व्याप्त के मारने में चन्द्रप्रिच करता गया ७५ मूंच प्रदेश प्याप्त से जाइक केपाइक डोक्ट संस्था में चन्द्रगाके दिनारे जातमाचा अस दिन क्याची के ज्याचा दिन सोहिटांचुळ म्यूप्ती बीज्य है राजन ।पातु-काव चनुनाओं में कन्या प्रत करतीनमूँ अनेक था थे हैं राजन । प्रात्त-काल प्रमुच्या कम कथा प्रत करतीयह अभिक् प्रकारकी केंद्र हथा चौंगुम्बर एक् रात्ते , कुल चनता - कुल कुल क्या कुल मामित निवाद से पूजन करती गई तब बहुत गुणकाले काल कुल कुल राजा के भोजन करते का मन होता चया तो कियाँ से राजा बोल कि इस समय में काल के कमान के मेर रिस्पण प्राण होंग्रों मिल्क जामेंग नक किया चोलां कि हुँ थापरहित राजन । शहरहा (नक्त आका त्व क्या करना पाडिये 9515c जो इत्या-जन्माप्टमी में जावको मोजन न करना पाडिये 9515c जो इत्या-अंक्रेजनमाँ मोजन बाम करनाई वह मीच, गया, केंब्रु मारे गक साक अस्मान गायाम् जाम् अराज्य पर नाम, राज्य कार्य पार के मांस को निस्सन्देह भोजन कतता है ७८ संसार में वसते हुए क भारत का गारतरायक पारता करता थे उन्हें राजार में पारत हुए समध्यों के क्या क्या जिड़ नहीं उत्पन्न होते हैं जिसने देहमें प्राच भनुभ्या क बना क्या एक नहा उत्तम हात र ानता वृद्ध आये स्थित हुए जयन्तीक वत नहीं कियाँहे =० नहीं वत करनेवाले से यमराज के स्थान में दश्ड मिलता है ब्यौर जिसके दिये <u>ह</u>ये को यमस्तर रू स्थान न २४६ लाखा व नार जिस्से जुन हुए स्व पितर निश्वही यथाविधि नहीं प्रहण करते हैं = १ और जयती में मोजन स्टरने से सब पितर गिरादिये जाते हैं यह सुनस्ट राजा वत नाजन करन स सम्बद्धाः स्थापन नायः व न्यानुनक्त सन्ता मत करताभया ८२ कृत कृत, चन्दन और करदा लेकर प्रसन्न होकर इस वतमें युक्त होताभया और तिथि और नक्षत्रके अन्त में पारश इरतामपा तो चित्रसेन राजा इस वत के प्रभाव से पितरों समेत सन्दर विमानपर चड्कर भगवान् के स्थानको जातामधा जो फल ुः पर प्याप्ता प्रदेश व्याप्ता के त्यापा का प्रतास का प्रतास का प्रतास मध्याजी में जाकर कृष्णाजी के मुखक्षणी वमल के दर्शन करतेसे मधुराजा म जारूर हरणावा के मुख्यप्ता बनात के देशेत करनेसे मिलता है पद्। पट बा एक हरणावीकी जनमाहमी के बात दृश्य की आह होता है और दास्का में जारूर संसार के देश्यर मालाइ के देशेन करने से जो एक मिलता है वह फल दीमों को हरणावमाएमों के जल करने से मिलता है पर, ॥ इति श्रीयद्मे मदापुराचे बसलवदे दरिशन्माहरीयवमादास्थं नाम क्षेत्रको प्रवास १३ ह

चतुर्ध व्यासन्द । चौदहवां ऋध्याय ्य देवताओं के ब्याध्य, साक्षात नारावव, प्रमु है रे जे 'वता ब्राह्मण को अक्षिये नगवान की बुद्धि से प्रवास कर देवता झाहारा की मांक्रिय भागवान का शुक्त से अवना निर्मात के सम्मदा व्यादिक बदती है दे जो अधिमान कुछ मनुष्य मिन्दा से झाहारा को देवकर नामस्कार नहीं करताहै तिसके शिराको भाग बान् सदेव काटने की हरका कारों हैं १ जे वापाबुक्ति मनुष्य कार-राध्य किसे कुए भी झाहारा से बेर कारते हैं वे मानवान से देश कारों कार्य आमरे प्रोधार हैं और वे बोर कार्य में जाते हैं १ जो आधीना वाले जानमें थोज्य हैं ज्योर वे प्रोर नाल हैं जानमें हैं थ, को जाएंगा करने हैं दिन्दे आप हुए नाज़रून की फोबरे देखना है जिसके नेती करने हैं दिन्दे आप हुए नाज़रून की फोबरे देखना है जिसके नेता मुख्य जात्रपत्र को बादता है तिलके मुन से क्यान्त है हुत नाल कुछा जोता है है है है जहारी जात्रपत्र के प्रश्न नाल कुछा जोता है है है हुत जात्रपत्र आप प्राण्याची समस्य आपकी हिम्म कुछा जात्रा है है को मुख्य क्याना से साम्य आपकी हम्म से मेना करते हैं है को मुख्य क्याना में साम्य के स्थापन करते हैं है सताई ६ थ्यार वा गोक्स काइसम्ब च्या भाष हुए तताब धीय में तेताई वह सब पापीले हुए जाता दे एवं में मुम्म स्वादी करता है 30 पूर्व होता स्वी आदात के स्मातकारी चरणाटे सेवनी से पुक-सतित होती है थ्यार वातक सर्माव्याली कारणाट सेवनी से पुक-सतित होती है थ्यार वातक सर्माव्याली कारणाट तीते हैं 3) प्रमाणक्षी वितने तांत्वें हैं तिने तीव्यं समझ हैं और समुद्र में वितने तांत्वें हैं वे आहणांचे चरणों में स्थित हैं पुर यह आहराईक ।जतन तात्प रू व प्राक्षणक चरणा म स्थात ह १२ वह श्राह्मणक चरम फ्रोनेवाला सब तीजों में स्वान करणुका चौर सब पापों से वृहचुका है हे शीकक, तपसी, ओष्ठ ब्राह्मण ! आह्मण के चरक जताक पाप नारा करनेवाले मांडात्म्य के इतिहास की में बहता

मुनिये पुर्वसमयमें बनिये की जीविका में कावस १३। १८ स-ह मुन्दिप दुस्तम्पन बानम् क्षा जालकम म्हणाया ३६ । ३५ डी. परपुनामं मीहा मान् मुझ हुष्या है यह हजार अग्रहरण करने प्राप्त विह्नु सुदेव वर्षणकी स्वीही असका, सहान, १५ १५६के आचार से अग्र आरं गुरुजी की स्वीहो भोग महत्त्वाला हुण्या है तिस हुए-दिक्त चोरक हार्यों की मिनली जहीं है उसके पायकों में स्वाप्त का एक समयवाँ पक्ष दिली जाइएण के स्थानमें गया १६। १७ व्यार वर्षा जन्म तिसके घरसे हत्य शेनेका मन करता भया तब बा-वहा अकर गताक बरता प्रज्य इसके बाहरके दरवाजे के पास सदा होकर १८ तपस्वी जानग हुएको सार्क्ष र सार्का के प्रांत पढ़ा विरुप्त १८ तरावा आहेल हैं। में हीमार पूर्व करा के कि सार्वामित्र हैं। में प्रसंप पति हैं कि में स्वार के स्वार के स्वार के सार्वामित्र के सार्वामित्र के सार्वाम के सार् म न्तरत्त्व त्रसक त्रमा शुंक कहा जानता हूँ एवं तब नाज बाजी कि है भेड़ हाइएा मेरे भी बोई नहीं है इससे में गृह होक्क चायके स्थानमें सदेव रिशत होक्क ब्यापकों सेवा करेगा १२५ सुतजी बोजे कि है शदकों, होजक ! ये मीम के वचन सनकर बाह्मरा ब्यानक समेत होकर श्रीब्राही रसोई बनाकर ब्यान देते मंगे २५ त्व मीम मी स्थानन्द् युक्त होकर तिस आहार की मनोहर र सेन्द्रकृत सेवा सरते हुए उनके घरमें दिशत होता नया २६ जीत स्थान या करत इसके मार्चमा इसकी हक्य मेरीही हैं यह निस्मेरेड इंट्य होनेबी इच्छा करता भया २७ यह हृदय के बीच में विचारकर तिसके चरम धोने कादिक हो किया कर चरवजल को शित में लगावर पापरहित होगया २८ व्योर चरकतल को व्याचमन कर कपट से प्रतिदित किर में लगाता भया एक समय में कोई चोर हव्य लेले के लिये जाजार के वहां व्याया २८ तो साथि में क्वियायों को उत्सादकर तिव

पन्द्रहवां अध्याय

एकादशी का माहातन्य क्वीन ॥

शीनकती बोले कि हे महानाग ! एकादशी के पाप नारा करने वाले माहरम्य को कहिये एकादशी के बत करने से क्या फत होता में ब्योर नहीं करनेसे क्या पाप होताहै १ तब सुतजी बोले कि इस समय में में प्रावशी के माहात्म को क्या कई प्रशवशी हा नाम सुनकर यमराजके दत शंकापुक होताते हैं २ जो कि सब प्राणियों के मय करनेवाले हैं इसमें सन्देश नहीं है सब बतों में श्रेष्ठ शना एकादशी को ३ वत कर विष्णाती को महान मण्डन चार जागरर करें जो मनुष्य गुलसीदलों से निश्चव मनवान की पूजा करता है 9 वह एक दलसे करोड़ यहा के फलको प्राप्त होता है नहीं मोग करनेवाली स्त्रों से भोग करने में जो पाप कहा है प्र वह पाप एका-बशी में वत करने से नाशको प्राप्त होजाता है हे जाउगा ! जो एकाव्यों के दिन में भी से पूर्व वीप देता है ६ कर अपने तेजसे धरवस्य नायश्रम धरतसमयमें विष्णुजीके पुरको प्राप्त होताई ते देश धरवाँई ब्याँर वह राजा धरवाँ ७ जिसकी राज्यमें हरिने दिन में एकाइशी का बढ़ा उत्सव होता है नारायण जी के शयन प्योर पारंप के परिवर्तन में 🕳 और विशेष कर प्रबोधिनी एकावशी में जे 92 स्वपुत्तम भाषा । मनुष्य निराहार होते हैं उन पुश्यमापी मनुष्योंको हमाने पास नहीं जाना १ पर पमानन जी दिस्तान हतीको भाषा देते हैं प्यावशी जगभावती की प्याची और पुश्यमें पदानेबाली हैं १० तिरासे अस के मोजन करने में भगावान् देशको जनात्तेत हैं तिनके जीवन, स-प्रवा, मुक्दाना जोद सर्तनाई भाषात्ते जीवन स-श्रीमें प्रमुप्त भोजन करते हैं वे विष्टाको भोजन करते हैं है श्रेष्ट माहाय। राज जन्म नाराज करा उन लगान नाज वराइड व अठ माहाय! एकाहड़ी में केवल अझमें व्याजित होकर ३२ अनेक प्रकार के वहत पाप स्थित होते हैं जैसे अमानसमें क्षियों के भीग करने में बढ़ा पाप होताते १२ तसेही एकादशी में व्यवके मोजन करने में पाप होताहै हातां है १ तसहा एकवरा। में चक्क चावन करने ने पर तरि रोगी, केंग्र ने, सोसी खुक, एंटही से बोदी १ १ वे प्राची एकादशी में कक्क भे भोजन करनेसे निश्चय होते हैं गांचक सुच्चर, हरिह युक्त १ ५ बीर एकादशी में मोजन करनेसे राजांचे यहां बांधेताते हैं संसार में जितने पापेंडें वे एकादशी में १६ मोजनमें पाश्रित डोक्र रिपत होते हैं और बाह्मसे जब भोजन करनेवाजों के सब पाप नाश हो-जाते हैं ब्योर नरकसे निष्कृति क्षेत्रमारी है ५७ परन्त एकावशी में जात है बाद सरका निष्करत कार्या है है। उप परि पूर्वपूर्व की है। अब्द ओड़त करनेवाल मृत्युं की सरका से निक्ति है। है। है है मृत्युं प्रकादधी में तितने बाद भोजन करते हैं ३८ उसमें प्रत्युक्त बादमें करोड़ बादावराम्हण पात्र होती है सनुत्यों में बादेशर कहाता हुँ सूत्री ३९ एक्सडा के दिल कार्यों भोजन त करें प्रकास ब्हैत मुख्यके ब्रह्मके रागविक ती गों में स्वान करतेने औ कल मिनता हैं वह फुळ एकादशी में अत कर कमल की मालाओं से भगपान को पत्रम स्रोमेसे मिलताहै २०१२१ हे आहाल ! विभिन्नवेक पारल सर माताबे समें में नहीं आताड़े एकादशी में नगवान के स्थान में जो वरवन करताहै २२ वह क्षेत्र मतिको प्राप्त होकर विष्णानीके स्थान में रिथत होताहै और जे एकादयी को प्राप्त होकर निराहार होते हैं २३ तिनका निरन्तर निरसन्देह विष्णुजी के पुरमें निवास होता है जोर जिनका मन तुलसाजीची मक्तिमें ब्यथ्डे प्रधार लीने होच्य प्रकाशित होताहै २५ ते निस्सन्देह विष्णुजीके परमस्थान को प्राप्त होतेहें जिनको पराई इज्यों में सचि नहीं विद्यमान होती है २५ और जे संतुष्टमन होते हैं तिलका निश्चम पिष्णुपुर में गास होता है जे उत्तम काल पाकर प्राणियों को ब्यन देते हैं २६ विनवर निरसस्टेह अपन करण नाकर कार्याच का जान ना व रहे (कार्या मार्थित) भगवान के स्थानमें वास डोताड़े चोर गढ, जाह्मवा, स्वामी और सो डी रक्षा करने के लिये जे मनुष्य प्राची के ओब देते हैं तिनका ... २० २० २० १ ७ १७४५ ज न्युष्य आस्य व्हे जहाँ दत है तिनका निश्चम विष्कुपुर में बस होताहै प्राचीलोग दशमीविका प्रवादणी तर्पण विराधित के साम क्षेत्र के संगति गाँउ हो है वे अस्य सभी अत न सर्रे २७ । २८ दुर्जन के संगती गाँउ हो है वे अस्य के उदय के समयमें जो दशमी हो २६ तो डादशी का अत करना माहिये प्रयोदर्शी में पास्य करना चाहिये दशमीशेव संग्रह जो बाहरवका उत्प हो ३० तो वैष्याव मनुष्यको उस दिन एकादर्शी का व्यत न करना चाहिये चारवर्डा प्रात्मधल चरुहोदय कहाता है २० प्रमुख करवार कारणका कारणका करवाद कहाता है १९ प्रमुख संस्थासियों के स्थानका समय गंगाजी के जल के समान २) यह सन्यासया के समय में जो दशमी दिखाई पढ़े ३२ तो वह कहा है बसलोदय के समय में जो दशमी दिखाई पढ़े ३२ तो वह एवादशी धर्म, क्रमं कोर इक्य के सारा करनेवाली होता है यह महीं करनी चाहिये ३३ महिरा के विन्तुके पड़जाने से मोके घड़े की माई स्थाग करदेवे चौर तो सम्पूर्ण पकारणी हो तो डाउगी में ९५ संम्यासी लोग इसरे दिन जन कर चौर पहले दिन पकारणी ्रह पर करण थार पुरार एक मार कर भार पाछ ।दन प्रकार ए में मुहरूव मृत करे एकादर्श कलाभर जो हो ब्लैर उपरांत हादरी भ सहरच भरा कर प्रभावरात भयात्रार जा वा कार प्रभाव कर्ना म हो ३५ तो ब्रत करनेसे सी यज्ञ करनेका फल डोताई अपोदशी में पार्य करना चाहिये और जो एकादशी की हानि हो उपरांत हादशी यक्त हो ३६ तो जो परमगतिकी इच्छा चाहे तो पर्च हार्रशंका वत करे ्राण्य प्रदेशात्रण प्रत्यास्त्रण क्षण्या मध्यापुरा अप्रत्याप श्राप्त स्वाप्त जो सम्पूर्ण प्रवद्गती हो आदि प्रातत्वाल दूसरे दिनमी प्रवादशी हो हो ३७ अपरान्त झादशी हो तो सबको पीन्ने वी एकाइशी करनी चाहिये जिन मनुष्यों का मन एकादशी में लीन होता है ३= तिनका परलोक का साधन कुछ नहीं है ३६ बहुत पापीसे यक होकर भी जो एकादशी का बत करताहै तो का सब पापों से इटकर भगवान के स्पान को जाताहै १० और पति समेत जो की एकदरों का वत करती है वह सुन्दर पुत्र पुत्र को स्मूहरानकी सहका मरका हरिजी के स्थान को जाती है ५१ है श्रेष्ठ बाह्मण ! जो महिनावसे नगवान हे जाने व्यारक्षी में बीच देता है तिसभी कुणवाड़ी मिनाती सी हैं 22 को जो ज्याने किसातीत पायक्षी में जागरण बनती हैं यह एमिताल बहुना क्यानक दिसी के रचना मिरवा होती हैं 22 को जो मिंडिने जो जुम बन्दु क्यानकों में मणवान के अपने देताह तिस होता होता कारणदेत कुण को हैं 22 पूर्वनस्मान में बेचाना हैं सार में वाहन नाता हुआ है व्यारक्षी महामान में बेचाना कार में एमा होता था 22 सिसानी महामणवीं की होतामा नाम हुई दश हासको होता हुआ है अब बेचान कारण कारण करता में हुई दश

कुत्रकार प्राथमित, पुर्वास भीन्युम भीन्युम भाग भाग भाग भाग भाग भाग स्थान भाग भाग स्थान भाग भी स्थान भी स्थान में स्थान भी स्थान भी स्थान में स्थान भी स्थान स्थान

प्रशास के प्रमाण की बाह्यांने उनके दुन मर्चकर देसते बहेर मुद्र बांधों किने हुए तिसके केने किया मात हो गये पुथ बहेर बात उनकों बीचना माता कर पाना में कोनों के मात कर में तब दिलानों के दूत गांच, चक्क बारे महाकों आपता किने हुए कान पूर्वेच पड़ आई करने के अक्क्स तिमाण परिता अक्क्स निक् पूर्वेच पड़ आई करने के अक्क्स तिमाण परिता अक्क्स निक् मेंन कींकों सम्बद राजों बैठाकर माताला के स्थान की बचने मारे एक तब विकाद के स्थान की स्थान की स्थान की बचने मारे रूप माताला के अस्टिसी माता कीतानी मारे हैं अंद्र झाला है हु एक्ट्रसी वर माजरूप तुम्में वहा ५८ में किया इत्या के भी क-रातों द वहीं में मागाया के स्थानको साथ होता है जो मनुष्य एवा-रतों के दिन भी रही की स्थानसाई में मिल्टर पूर्व को हों मह प्रत्येक एक्ट्रसी की दिन मुक्के वा पहिल् का साथ होता है और में पुश्राओं को एक्ट्रसी के दिन मुक्के वा पहते हैं ने अस्के मान्स में वरिस्तायक के मुन्ते दलका करावी मान होते हैं ६ १ मान विशेषात्रका होता होता है है है १ मान स्थानको स्थानको हो साथ होते हैं ६ १ मान स्थान स्थानको स्थानको होता होता है है है १ मान स्थानको स्थानको स्थानको होता होता होता है है १ मान स्थानको स्थानको

सोलहवां श्वध्याय आगर को के लोग लाई कीन की की का माहत्य वर्धन ह

भागना जा तर दुष्णाना (शहस स्थान विषय माध्या भागना माध्या स्थान स्

मुर्भ ब्रह्माय को जो पश्यक्त समान दान देता है तो उनकी कुश्य नहीं होती है — जो मुद्दुब्दि, विचारवित जाएड मेक्स से दान जे पहल करता है को जैसे कालकि पत्यति है तिसी तक से जर सरक में जाकर एपता है के जैसे कालक हाथी और तककी स हरिश होता है तेसे हो शिचा होन ब्राह्मण होता है ये तीनों नामही श्वरण करनेवाने हैं ९० जैसे शहमें स्थित जन पवन चौर सूर्य है न ।नर २० वरणाव ३४ व २४४ मालण : पुषरावयन करवारपुर म एक द्यारहित कालडिज नाम खुड हुव्या है वह पापी, मय करने बाला १५ वर्षने कार्य्य में निरत फोर स्वामी के कार्य्य का नाश करते हाला या एक समय में जब वह नाशको प्राप्त हो गया तो न-करनवाटा ना एक प्राप्त । इन्द्रुर यमराज के दूत १६ तिसको यमराज के स्थानमें लेजाने के विषे प्राप्त हो गंध ब्योर बांधकर ले गंधे तब उसको देलकर यम-राज जी चित्रमुस मन्त्रीते पृत्तते मंधे १७ कि हे चतुर चित्रगत मन्त्री ! इसका क्या शुभ कोर व्यशुभ कर्म क्यामन है तिसको मृतः समेत कहिये १८ तब कित्रगुप्त बोले कि वह पाणी, दुराचारी क्यार श्मत काहप ३८ तथ । वसगुप्त बाता का वह पाया, तुराचारी चार स्वामी के बार्ट्यका नाहरा करनेवाता है इसकी व्यवामात्र भी पुरुष मुद्दी है हसको नरक में पचाहचे १६ किर है सतत्र ! यह तिहर मनुष्य से मध्यत्तर सांपर्ध्य योजि में पुगरक घर में अन्म लेकर भिरन्तर श्वित रहे २० सत्तजी बोले कि हे ब्राह्मण शीनक ! नितने भारतर शिका शा १ ५ एता वाका कह है आवश्य आपके। शतीन स्वार कर कर पानमा बुरिक्त मानुका नहीं मिरा हिस्स प्रसार के माने सोपाड़ी जीने में उसके हुआ १५ है माहान । वह समय में कियर के माने के पीनोमांसे हैं नियम सामे जाएं आई की ही दिससे बाद के बता माना १२ तो जह भारामा के माने गिराती मंदे तक हरिजी देणानु हुने साम उसनेका आपाई। मोने माने पापड़ो मानु कर देव गर्म १३ क्यांकित बाला प्राप्त सेकर अब कह भारतः गारा कर परा गान १५ कला कर्न करण करण साथ अव सांप नाशको प्राप्त हुन्या तो उसके लेने के लिये बहुत से पमराज

 ५०० क्येर कालो संस्कृत जब सम्मारिके 	स्थान
के दूत प्राप्त होगय ९४ जार उराज । को जोतानेका मन करते मये तब तो राह्म, चक और गद्रकी	क्रस्य
की तीतानेका मन करत भय ता वा राजा पर्या परिवार के वार्	ecra#
को जीतानको मन करते वय राज प्रश्नी के श्री स्थानिक कर विद्याली के दूत मी जातपहुँचे २५ और शीवही केंत्ररी व	क्षे स्थ
कर विच्युजाक देत मा जानपशु तिस पापरदित को सुन्दर स्थ में चढ़ा लेते मये तब यमराज	Service .
कर भगवान के ब्याग स्थत होता जार कोंदी देताहै तिसक भक्तिमें भगवानको यी समेत ताई ब्योर कोंदी देताहै तिसक	३पुरय
शास्त्रित संस्थानिक का ताना है - जेनी के उन कार	को इस

पाप तारा करनेवाले बाज्याय को सुकता है तो उसके श्रीहरिजी की हवासे पाप नाश होताते हैं २६ ॥ श्रीत श्रीवादी महरदयाचे सामलावे मनशीनकसंचारे प्रेटकीऽप्यायः १ ६ ॥

को निरुवय में नहीं जानता है कि क्या होती है २० कोर जो इस सञ्चहवां ऋध्याय

शीनक बोले कि हे महावृधिमान, व्यासागर, सृतजी ! विण्युः जी हे परणीदक के पाप नारा करनेवाले माहास्म्य को मृतलामेत समसे कहिये १ तब सतजी बोले कि हे ब्रह्मन, श्रीनक ! सब पाप माश करनेवाले, शुम, बिच्युजी के चरकोदक को जो करमात्र मी प्राप्त होताहै तो वह सब तीर्थ के फतको प्राप्त होताहै २ विष्णाजी के चरफतल को स्पर्श करने से पाप नाश होजाते हैं पाधालगुर नहीं होती है और जुनेवासा संगाजी के स्नानके फलको प्राप्त होता हैं 3 जो पापी निष्णुजी के चरणोत्क को पीता है तो उसके किये हुए देह के स्थित पाप निस्तान्देश नारा होजाने हैं ४ जो स्तुप्प महिसे तुलसीवल संयुक्त विष्णुजी के चरणामन को शिरसे पाररा करता है तो वह बन्तमें ममनान्हें स्थानको जाताहै ५ मेहपपंत के बराबर सोता देनेसे जो कहा भिनताई वह फल मनुष्योंकी हरियों के बरसज्जन स्पर्य से प्राप्त होताहे ६ हजारकोड़ गोंथके देनेसे जो परत मनुष्योंको मिनलार्ट वह फल इति े के परगानत के हुने ते प्रश्नाम माणा मित्रपार माणा मित्रपार आगे होते दे कारणोर पास्त्रमें से बो हात मित्रता है के लिए बोर प्रधान भागवन के प्रपातन के सार्र से आत होता है - चार्र पास्त्रम करने से को अन महत्त्रम के सार्र से आत होता है - चार्र पास्त्रम करने से को अन महत्त्रम के सार्वा है के हित्रम को पास्त्रम करने को अन महत्त्रम के सार्वा है है है तीन को पास्त्रम करने सार्वि है तीन की सार्वा है के सार्वा माण्ये स्वार्त्रम को पास्त्रम के पास्त्रम के पास्त्रम के कारणा कारणोर के पास्त्रम के सार्व माण्ये स्वार्त्रम के पास्त्रम के स्वार्त्रम के सार्वा है के हित्रम करने स्वार्त्रम के पास्त्रम के सार्वा के सार्वा है के सार्वा है के हित्रम करने कारणोर के सार्वा है सार्वा है अने हैं सार्वा है के सार्वा है के सार्वा है के सार्व है के सार्वा है के सार्वा है अने हैं सार्वा है सार्वा है अने हैं सार्व है स धिक दिरगुरी के चरणाजनक रूपा से पाना है 93 है बाह्यण स्थित के पान है से प्रस्ता है स्था है से प्रस्ता है स्था है से प्रस्ता है से प्रस्ता है स्था है से प्रस्ता है से प्रस्ता है स्था है सार्व भागान के प्रस्ता जाता है 93 तम श्रीनक बोले है है सुनती। प्रवेशसम्ब में हिम प्राणी ने मानवान के प्रस्ता करता है स्था है सार्व प्रस्ता है स्था है सार्व प्रस्ता है स्था है सार्व प्रस्ता है सार्व सार्व प्रस्ता है सार्व प्रस्ता है सार्व है सार्व सार्व प्रस्ता है सार्व सार्व सार्व है सार्व सार्व सार्व सार्व सार्व है सार्व सार दमा बरूक कावच १६ तथ पुराना चारा १५ वर्षा मानवा देश सक । वृद्धसमय जेतापुरा में सुदर्शन नाम पार्ची आहमय पत्तावर्शी के दिन नित्वहीं मोजन करता था १५ शाख च्योर जतभी भी सदेव निश्वा करता था ब्योर बापने पेट के विना च्योर कुछ यह गर्ही जा-बता था १५ एक समय में काल पायर नाराको आस होगया तो बता था ४४ एक रामच भ काल भाकर चाराका जारा धाराचा ता समराज के दस ब्याकर उसको बांधकर समराजके स्थानको लेगाये पासराज व दूत भीकर उसका बाकर प्यत्याज्ञ र्थाना कर देवाना की कर हिस्सी हो होता है देवाना स्वाचित्र स्वाचित् इस्तर राज्यान ना गाँउ व स्व करता रहा है १८ है राजन् ! जो अध्यम मनुष्य एकादशी में मोजन करता है वह विश्वको मोजन करता है च्योर चोर नरकको जाता है करता हु गह । पढ़ाका भावन करता हु आर यार नरकका जाती हूँ २० इससे इसकी सी मन्त्रन्त पर्यन्त नरक में रूपान दीतिय तर-मन्दर गांवके कुत्यर को योगि में जन्म होना २५ मुतर्सा बोगे हि हे बहाइत ग्रह्मका तुम यमसराजी की व्यक्तिये उनके मर्थकर दूरों में सी मन्द्रन्तर पर्यन्त निष्ठा के नरक में तिसकी मिगमा २२ जब न्तुप कशनणः। समस्ये वृद्ध तो प्रथ्ये में गांवका सुक्तर बोकर बहुतकात तक एकादर्शी के मोजन करने हे सरकको मोजन करक रहा ५३ किर काल प्राप्त होनेपर सरकर कोंक्से योजिमें जन्म लेकर सहेद विष्णु ाल आत दानपर भरवर कावक जातक जातक अन्य अवर ११वर तथा विजन करता रहा २४ एक दिन वह बहेवा द्वारदेश में रियस श्री भाजन करता था। ९५ एक दिन यह कावा डारदरा में दिखा औं हरिजी के परशास्त्रको पानकर सब पाने से शरित होता गया १५ सीर तिसी दिन बहेतिये वा श्रीका गिरा तम सम्ब में बहेतिये ने कुरेबेको भी मारहाला २६ तब दिग्य, गुन, शन्दर्शों से पुढ़ रस विश्वरहरे जाण तिसपर क्षेत्र चटकर नमजान के मन्दिर को जात

चुन्तरात्रः नामः । तात्रपर अस्य चनुश्रर नामका, क सान्धर का यात्री अत्या नृष्ट यह पाप नाश करनेकाला चरस्तरात स्व साहास्य बहा जो पापी मनुष्यमी इसके: मुनताह तो उसके पाप नाश होजाते हैं २८॥ इति श्रीपासे वहाङ्गये भागत्वे मृतसीनक्षेत्रोट चर्चारकमणाणे अठारहवां ऋध्याय

साग क मध्यमण का रचन क होजकर्ता भोते कि है सत्तर्जा ! जो भिगेतित होकर महीं भोग करनेवादी स्रीत भोग करता है तो उसकी मुख्य किससे होती है पह मृत्युस कहिये 9 तक सुरुती भोते कि जो उत्तम आक्षम कुछा प् भूतात कारण २ तम पुराना नाम स्थाप है यह तीन व्रतकर तिसपीके कानेपाली चापदाली से भोग करता है यह तीन व्रतकर तिसपीके प्राज्ञापस्य करें २ शिकातमित वाल वनयाकर वो गोतान वेकर य-प्राज्ञायस्य करें २ शिक्षसमत् यात्र वनस्यकर दा गाहान चरुर पर बार्ष दक्षिया देनेसे यह महामण ुरेलो प्राप्त होता है १ छारिय स वैस्थ तो चारदाती से मोम करता है यह प्राञ्चायल, इन्स्ट्रूकर हो मीर्थ के जोड़े देवे ४ कोर तो राह्य कुचे पक्षनमामली कारदाती से क्षेत्र करे तो चारगीयों के लोशों को देकर प्राजायस्य प्रत करे ५ जे भाग कर ता चारमायां क जाशों का एकर माजावण नवं कर रेजी मोदिदा मोदिता माता, वादनी अपनी कच्चा व्यक्ते मोनी पूर्व देते मोदिदा मोदिता में क्षा माता, वादनी अपनी कच्चा व्यक्ते नामिल के तीता माता मोदिता कच्चा माता के प्रचारमायां मोदिता मोदित गोवसे उत्पन्न सीसे जो मोहसे भोग करताहै वह दो प्राधायल करें ह तीन चान्हायल भी करें यांचगोतीके जोटे म्हाँद दक्षिका जाउपर्यो कार तान राज का पूर्व का गुरू शुनाता व उद्दर है जार आहा आहा पोक्ताति पंचात्रका पाँच हो गड़ा कार शिल्या देवे तो निस्सवेद शुक्त होजाती है इह जो पराई कोले मोना करताहै वह इच्छ सान्तपन करें जैसे कार्याद्या है निस्ताह क्ली है तिस्सोदी की की बार्जित करें ५० जो जैसे क्यांने हैं तैस्तरी सो है निश्तर हो भी का बाजन कर 19 जो कहमा करने साहरतानी थार मोच सीच में एकमार गोन करता है वह प्राप्ताप्त्र हुन्जु कर निश्मन्देह गुरू हो सहता है 5 क्यांगर के समान क्यां करिया है जो है कि समान पुरुष है सहसे सी की और हु-स्तर पुरुष ये एकम्पने कमी शियत न हो में 12 जो कुन के नाश करनेवानी की व्यक्तियानी दूसरे एकसे गर्म को असक करती है बाद संबंध हो बहुने मोम्पन है तिमक हो करने में येन की होता है दे जी ही पट से कहने माहर्स की होता हुन करने होता है यह मुदू

बरहाई यह राज ब्लेंग तिलों को देकर निस्तान्देश गुन होता है एए। इति क्षीचक्र नहायुग्ये कामान्दे संस्थानकां वार शासकां रूपना १ = ।।

क्टाकास भाषा ।

पतुर्व ब्रह्मसम्बद्धः । उन्नीसवां ऋध्याम रिश्व और मुत्रके सासेने और संदेशके रार्श व्यदि धार-क्षांका प्रकाशिक वर्धन थ

स्तती बोने कि हे गोक्क, ब्रह्मण ! ब्रह्मानसे जो दिहा, मृत ब्राजेते हैं क मदिस को स्पर्श करते हैं तो तिस प्रकार से तिनकी शुंखि होती है तिसको वहता है सुनिये १ हेमने ! तो प्राजापत्य हर ा कारण के राज्यक करणा है, पुल्पक व स्पूर्ण के माना समित बाल क्यों में प्राव्हर स्थानह बेल ब्यार सक दान देवर शिखा समेत बाल ताथा म आफ्न म्थानह घल भार शक दान दवर रागस समंत बाह बनवाकर २ चीराई में जाकर सब प्राज्याचय करकर हो गळ देशर वेबाव्य पीकर ३ प्राप्तभों को मोजन करावे तो निस्सान्देह गुज हो प्राता है सामसे विश्वतियों में चायराल के भार व्योर तह की हे हा लाता व सामात जनसङ्ख्या है । वह हम्म् चान्हा वराकर शिखा जो होई मनुष्य भोजन करलेता है । वह हम्म् चान्हा वराकर शिखा जा कार गाउँ जा जाना कर पंचाराज्य पीबे ४. ब्लोर एक, दो, चार गाँवें समेत बाल वनवाकर पंचाराज्य पीबे ४. ब्लोर एक, दो, चार गाँवें सनसे ब्राह्मपों को देशे. गृह का ध्वस, सून का कहा चौर जहां थे सामे पोल्प नहीं होते हैं हमको ह चौर शहके जीठेको जो विपरिचाँ काल परन्त एका दश्य व दशका व कर गृहका गुजरा का प्रधानका में झानसे मोजन करनाई वह वो प्रस्ताक्ष्य, तीन चल्हाप्यक्त ७ दो गुज देकर पंचारत्य पीने चोर कॉम्स में हरूतकर बहुत से झा-था गांच प्रथम प्रथम का जार जागा न व्याप्त प्रश्न है है हो है। इस्मों को मोजन कराये तो जिल्लय गुज्ज होता है ८ मूसा, न्योरा क्षीर विज्ञारोंके आपे हुए म्हतको जो समये तो तिल करा ब्लॉर जल में विज्ञानकर निरसम्बेह गृज होजला है ८ जो मनुष्य प्यान, ज इसन, शिष्टु, ब्यंशाबु, गाजर ब्योर मांसको भोजन करता है तो यह हसन, (राष्ट्र, क्यालन्, माजर प्यार भारका भारत करता है तो वह कान्द्राप्त्य कर वह १० जुलके महिरा जोर मांस दिय होता है इससे इसको पावडाल की नाई जो प्यानी में भी न संगाय १९ से आश्रव की सेवाम अनुसक्त, महिरा और मांस से बर्जिन, यान और आश्री कर राजा जाउंका अस्ति है वे उसम शह जानने चाहिये ६२ जो महाक कर प्रभाव से भोजन करता है वह दशहजर गायजी जर स्तुत में कहात से भोजन करता है वह दशहजर गायजी जर करनेसे एकिंग्र होता है १९ शीवर महत्र गायजीसे वस्प पांपहजार करनम २२० अला ६ १९ गायकी से शुरू होताहै चोर शुरू पंचनव्यस्ति शुरू शेता है १४ जो अर्थ थी, जल चौर दही को जीवके वर्तनमें स्थित हुए को व्यान प्रश्न क्यां क्या न्द्रायण वत् कर १५४ । राज्यसम्बद्धान्य चाराज्य च चनवाकर चन्त्राच्य च ५८ स्प्रीत हो एक देवह स्प्रीमीमें स्पन्न स्पर्दिक हत्वन बढ़े जो इस्स पूर्वक हामसे क्समें मंदिरा का पान होता हो १८ और होई मनु भीतन करलेवे तो वह मनुष्य कुलसे निकास देनेके योग्य होता भारत करकेश तो बार महान्य बुस्ता त्यक्ता दनक दम्य धारी हैं औ गडकें वी वांक्य पारंपाध्याल दक्का ब्राट्साली १० क्यों रहें के मां इतिहासी होता हैं वह तीन हुए वा प्रात्मक्त कर शिक्सप्तित बात कामार्थ पेकारण पीय १० बीच मांगति तिकिर्देख हुक्त कर तिकी कर है की पाम बार्च कर तक उसका प्रार्थ कर ते के प्रोत्म होता है २० कीनहित प्रात्म करना क्यांस प्रार्थ कर ते के प्रोत्म होता है २० कीनहित प्रात्म करना क्यांस तिकार विकार की विभावति हुन्हें भी तुन कर वें चार्य तीनहित प्रीत्म कर ते की न्यान प्रमाणिक प्रशासन क्ष्मा स्वापन क्ष्मा स्वापन क्ष्मा स्वापन का का व्यापन क्ष्मा स्वापन का का व्यापन का का २०, वश च्यर था चार कुरशक वल वश्यन पानर पानराज्ञ मत नरे हो चह सब पाप मारा करनेवला कुच्क्रसांतपन कहलाहै २५ तीनदिन एक एक ग्रास मातन्त्रत चीर सर्वश्रत बिना मांगे मो राजानून एक एक भारा माराज्यक जार साजकाण । पत्र मारा मारा सन करें तीति दिन बत करें तो यह प्यतिकृष्ण्यत होता है रूप तीन दिन गर्म जल. दूध प्योर बी पंजे एकबार दिन में स्नात करें तो दन । म जल, दूध न्यार धा प्यार होता है रह बारह दिन भीतन न पाप नाग करनेवाला ततकृष्ण होता है रह बारह दिन भीतन न करें तो पाप नाग करनेवाला कृष्ण होता है और पराहनाम प्रसिक् हों है तह में जानने पोश्य है रुठ रहुण्यतम एक एक दिगड बद्दि द्वा ह यह मां जामने शाय है ८५ ठूळाशास पर एक (स्टाब बहुर्स) बोर हरफरानों से फर्च एवं प्रदोश बोरी बाजास्त्र में मोजन म ब्रहें नी चानप्रधान का बेशा है ८ तमानकात प्रधानिय होंड़ पार दिवह बोर चारा को देशा हमा के प्रदार्श किया मानत करें नी दिवहचानप्रधान बेशाई १८ तो की कुमदरे के बारती हैं यह तीन दिना चेशाय की देशा है एक स्थान के स्वाप्त करता है एक तीन दिना चेशाय की साम की कार्य करते के साम होता है १३ तो नी उसका अमा बोरी तता बादय करते के बोर्ग होता है १३ तो र्शन की पादी बदासराने बदासराने राजसीनकरंगादे पत्रोनविंगीःच्यापः १६।

स्तव। क्षिकी प्

हा के मेदक के समान मनुष्य संसारकारी समृद्र से तरनात हैं है तुम सुनजी बोले कि जो स्वी एक प्राचित होसर राजा और इन्याजी के प्यारे कार्रिक महीने में श्लान कर लीह से शंधा और क्रजाती , न्यार कार्यक मध्यम न रणाम घट गावा स्व वर्ण भार हुन्य स्व १ पुत्रा करें २ मांस प्रादिक को संदिकर पंतिकी सेवा में परायश का पूळा कर र भारत जाएक का आकृतर काराता प्राप्त में प्राप्त रहे तो वह ब्यायन्त दुर्शन, श्रीतरिजी के गोलीक जाम स्थान की जाये 3 जो कार्लिकमें राधा धीर दामोदरजीको एव कौर दीन देती जाय इ जा कारणकल राजा जार कारणाव्याक हुत कार पात पता है सो बह पायों से खटकर विष्णुत्ती के मन्दिर को प्राप्त होती हैं ४ a ch नव समा ए युव्यर स्थलुता क नान्यर का आल द्वारा व ४ तो स्त्री कार्तिक में श्रीनगरवान के मन्दिर में क्याबा राख कॉर जा का कारतक न आन्यायात्र क मान्यर न कान्य राज जार समोहरजी को देती है वह बहुन समयतक मगवान के वहां रहती है श्रामुद्दरभाषा चार र जह गड़त स्त्रमण्ड मनावर स्वार (सामध् प्र जो बर्गसिक महीने में राजा और हामोहरतों को कृत और सुन चित्रत माता देही हैं वह केंद्रगढ़ मन्दिर को जाती हैं ६ प्योर जो की रचत मान्य प्रताब वर जुड़ाए मान्य स जाताब र जार जा सा सम्बद्ध स्थार शकर स्वादिक मेरेस शक्त स्वीर हच्याणी को देती हैं बह निश्चय भगवान् के मन्दिर को जाती है ७ कोर है जहान जो वह तरम्य मन्त्रवाद क नायुर यह काराव उ न्यात व असन्य; सा को कर्तिक में शता कीर कृत्वाची की प्रीति के नियं जो कड़ हा. ह्मणको देती है तिसाकी पुण्य माश्तरित होती है = जो की के तिक क्षणका बुता व ।त्तरका अच्च भारतका काताव च आ ता का कावक में शक्त खोर कृष्णातीको प्रातनकात प्रक्रिते चुना नहीं करती है यह बहुत काततक मरक में प्रात शाती है ६ कहाचित एको में जनम ्रासाहित हो प्रत्येक जन्म में विश्ववा होताती हैं और व्यप्ते स्थामीकी व्यक्ति नहीं होती है १० प्रवसमय जेतापुरूम ग्रेमर नाम शह हुन्या था यह सीराष्ट्रदेश में रहता था उसकी सीका कीलप्रिया नाम थ थ। यह साराष्ट्रदरा न स्थात ना उत्तरक ताल का करवा हरनेवा-९९ च्योर सदेव जाराबांसी (ज्यभिन्यारी पृष्ट्यों की इंच्छा करनेवा- भार राज्य जारा करता । ज्यान मारा जुरुमा का बच्चा करनका सी) थी पतिको तक्की नाई मानती थी च्योर कर पति मेरे योग्य क्षा) वा पातक प्रकल्प नाद नामता या ज्यार क्षा पात घर पाने नहीं है मेरा स्वामी परपुरत है ३२ वह मानक तहेंत्र निरम्पकर निसको जेंद्रा मोजन देती थी और महामुख्ता नीकोंद्र सेगासे प्रतिप्त बीर मोस को खाती थी ३३ और तिहर होतर स्वामीको नियदों बीर मोस को खाती थी ३३ और तिहर होतर स्वामीको नियदों

हारती थी कि यह निश्चय पोवेंकि रस्सी हुआ सर क्यों नहीं जाता कादता था राज कर राजर पत्र वाचाक ररता श्रुप्ता पर बंधा गई। याती हैं १५ तिसके मध्ये में में इच्छापूर्वक मोध्य करूंगी यह मूखा ममसे विचारकर तिससमय में एक न्यतिकासी पुरुषसे १५ जम्मदेश जाने विचारक तिसासकार्य एक त्योगिचारी पुरुषर १५ व्यन्यदर्श जात-के दिसे देकेजन हा गिर्च मोले हुए ज्यूरो स्थामीका दावसर गया-बाट बातती मार्च १६, ब्यार गीवे से सेकेलके रचकलो चर्चागर्व तब उत्तर स्थानी व्याद हुए ज्योगिचारी पुरुषके तिहरी लागिचा था १७ उत्तरको यह ज्यावस्था देशकर मूलो क्लिमिया मृश्वितक होकर गिर वर्षी व्यार ज्यावस्था देशकर मूलो क्लिमिया मृश्वितक होकर गिर वर्षी व्यार चुद्दत कुलतक दरूरणे होकर स्थास क्लेकर बोर्जा ac कि बरको स्वामी को मारकर प्रतिये परुष के पास आई प्रत्यन अभाग्यसे उसको भी सिंहने सालिया यन में क्या करूर कहां जाउं सद्यासे में ठगीगई हं १६ सतओ बोले कि हे महान, शॉनक! सहात में ठगागड़ है उर प्रतास करा पा द नहार, शानक: सहनन्तर शतित्रिया व्यपने घरको चली व्याई व्योर व्यपने स्वामी के मत्व में व्यपना मत्व लगाकर रोती डर्ड २० बोली कि डा नाय! अ उन्तर न जनन गुण चनावर राता हुद रूप वाक्षा कि हो नाय है हा स्वामित ! मैंने यह कारयन घोर वाम व्यक्ति नारनेका किया है मुभसे बाप वुड्वारी बोलिये में किस लोक को जार्डगी २९ मभ जुनते जाव कुंडा कार्यां मानिक ता कि ता कि ता कि कार्यां मानिक के कार्यां मानिक के मानिक के मानिक के मानिक के स स्वामिन प्रमाप कुछ कहते नहीं हो जिससे मुन्तकों पाप न होने २२ मृतकों बोले कि हे शोनक! तिस पीले वह बी पति के चरण में नम-

स्कारकर और नगरको चली गई तो वहां पर बहुत से पुरुष करने वाले मनुष्य २३ वैष्यावें कीर कियों को प्रातःकाल नर्मदा नदी में स्नानकर राजा और कृष्याओं की २५ प्रजाकर महान् उस्सव कर रांसके राजों और चन्द्रन, फूल, धूप, दीप, कपके और व्यमेश प्र-शारके सुर्गाधित फर्तों को चढ़ाती हुई यह देखकर नमतायह डोकर किनिविया उन कियों से पेत्रती नई कि है कियो ! यह क्या करनी हो

कीकोश्राय जन खिया स पुस्ता भद्र कड हासस्य। 'यह क्या फरना हा २५. । २६. तत्र कियां बोर्सी किड समायां, सब मझीनोर्ने जनम का-विका मझीने में इस लोग शुभ, राभा व्योर दामाजातों की करनाव फरनेवाली और सब पाप नाश फरनेवारी पुम्ताकर २७ कोहीं अन्मी के पार्थों का नाशकर स्थान मास किया है तब स्रोतिस्थिमां ्काद्रःी के दिन मांस त्यानकर मगवान् की पुजाकर रे⊏ विन्धेत

बनर्व ब्रह्मसम्बद्धः। बारून अल्लावन होबर बोर्चमार्सा में बारा होगई तो वसराज के दूत शीमही ग्रीपन पुत होकर समराज के स्थान लेखाने के लिये प्राप्त होगये और उसको चमड़ेको रस्पियों से बांचलेते ग्रेये और तिसी समय में सीते के बने प्रय विमान को लेकर निष्णानी के दल २६। ३० शंख, चक. गहा और क्या अस्पाधन कामाला प्रानकर प्राप्त होगये स्वीर चक के प्राप्तकों से बाटनेताने तब यमराज के इत माम गये ३१तो कति-प्रिया विष्णुद्रतों से ब्यान्सादित होकर राजांदर्सों से यक सोने के बने IMBI १४९७६०। सः न्यान्याप्ता वाचर राज्यस्य च पुरु तान ४ पन इस् विमान पर चहरूर विष्युओं के मन्दिर को जाती भई ६२ ब्यॉर हर प्रकार महोचाहित भोगों को भोगवर बहुतकाल स्पित होती महें है

बहापर ममाधाकत भागा का भागकर बहुतकाका रूपत हाता मह है प्राक्षण | को की कार्रिक में राजा कोर मगावान को पूजन करती है २३ वह दुवासे वार्पासे व्हाकर मनोहर गोलोक को जाता है जो कुरुर कोर की प्रकार्यकत होकर इस चरित्र महे अक्षिसे सुनता है तो उस ज्यर का प्रकार पण शाकर शत पातन का माजन शुनता हु ता उस पुरुष फोर उस खी के करोड़ जम्मों के इक्डे किये हुए पाप नाश होजाते हैं ३४॥ gति श्रीपाचे महायुगये अग्रातनरे सम्मग्रीनकमंत्रादे शखदायो-दृश्यूनामन्द्रारम्बक्वमं नाम विशानित्रमोऽन्ययः २०।

इकीसवां ऋध्याय

क्षाचिक महीने की निधि चौर नियमों दर वर्शन है शीवक बोले कि हे मुने, स्तती ! सब मासों में उत्तम कार्तिक महीने की व्यवसी प्रकार से विधि चौर नियम कहने के ब्याद घोरच है 3 तब सतभी बोलें कि है ओह ब्राह्मण ! श्रीनक ! एकाप्रविध होतर मनप्य केंग्ररकी पोर्शमासी में कालिंड का जल करे. ध्योर ए-र पर नहार प्रकार के अपना का प्राचित्र के आप कर जार प्राच्या के क्या कर जार प्राच्या के प्रविद्या प्रति प्रति के करतारहे र दिन में सर्वत मनुष्य उत्तर मुख इत्युक्त प्रति प्रिक्त सर्वत कर मीनहों वे बार राजि में दिलसमुख होकर धनर महर मृत्र करे ३ वत करनेथाना शह, जल, गोशाला, समराान परेस बोबीमें मृत्र व्योर दिशा चित्रे नहीं २ व्योर व्यावस्त उत्तम स्थानी कार्या है. में भी मत मूत्र न बरे किर शुव्यमित्री लेकर बायों दाय जेले ५ जर्ता स्त्रीर जीतसंस्था मित्री से सुबिक्टे लिये प्रोचे एक लिंगर्स, वांचगुरा

में, दश बावें हाथ में ६ ब्बोर दोनों पांचों में तीन तीन मिशी देवे त-दनतर मुसबी ख़ादे वर रनान का संबद्ध करे 9 हदय में दामोदर-दननार मुख्या शुरू वह स्थानका राक्टा कर उर्वन प्राप्त हैं ही का प्यापकर फिर यह मेंत्र कहें कि हे जनार्दनजी ! बार्सिक में में प्राप्तकात यात्र मारा करनेवाला स्थान करेगा में तिसमें होमो-दक्षी कोर राधिकाजी प्रसन्त रहें है आंग्रच्या ! कमलनान. जसमें शयन करनेवाले र राधिका समेत् व्यापको नमस्वार है व्यर्थ प्रहरा इस सेरे जपर प्रसल हजिये तिस पीचे स्नान कर विधिपर्यक ति-र नर अपर असान इत्जय त्यास पान इतान कर त्याम प्रवास ति: कि देवे ३० कंपनेपुण्डु से हीन होकर जो कुछ कर्न करता है यह सार हुई 3.5 क्यांचुल है। वीन हांच्या मा ह्या कर्म मारा है कर कर है। महत्या का सार के नित्यह हैं तो हैं 3 महत्या का के क्यांचे के क्यांचे हैं 1 महत्या का को क्यांचे हैं 1 महत्या का को क्यांचे के क्यांचे हैं 1 महत्या का कि क्यांचे हैं 1 महत्या के क्यांचे के स्थान क पुराश की क्या मुनकर मंत्रि से विधिपृत्तेक क्षाहारण को पुत्रन करें पराया जासन, पराया प्यान, पराई राज्या जॉर पराई सी की ५५। १६ सर्वेज प्रतिन करे जॉर कार्तिक में विशेषकर गीतन करें सीची-रक, उदं, मांस, महिशा ९७ और राजमाण व्यादिक के कार्सिक में

पश्चम्याम् भाषा ।

करे १० भाग्यमें महुनी कही है गीओं का तुरुव मांस रहित है भूमिसे उत्पन्न नमक है और निश्चय प्राची का अंग मांस है ३६ माझण के बेंभे हुए सब रस. बोटे तालाव्में स्थित जल, बार्राकाल में ब्रह्म पर्य ब्योर पत्तलों में मोजन २० को तेलकी मालिश नहीं करे, उपाक नाली, होंग, प्याप्त, पुतिकादल, २१ जहसून, मूखी, सहैं जन, तरोहें केथा, बेंगन, कुटहरा, कांसे के जर्तन में भी जन, २२ दूसरीबार प-कापा हुग्या, सर्विका का जहा, सदली, शरथा, राजस्वला सी, दो तीन आह और बी के नेगाओं का तिकार । १६ स्वास्त्र और बी के नेगाओं का तिकार माने प्रदेश के स्वास्त्र के तिकार माने देश देश देश स्वास्त्र के तिकार माने देश देश देश स्वास्त्र के तिकार माने प्रदेश के तिकार माने प्रदेश के तिकार में तिकार माने प्रदेश के तिकार माने प्रदेश माने प्रदेश के तिकार माने प्रदेश माने प्रदेश माने प्रदेश के तिकार माने प्रदेश माने प्रदेश के तिकार माने प्रदेश माने प्रद कालन्दकम शक्का वय हाता है एक एतम पान करनवाला का है पतिका ब्राह्मण के मारनेवाली हैं। वाताकी में पुत्रका माश होता है रहेमें बहतकाल रोगी रहताहै २७ मोत में बहत पाप होताहै इससे ०५म न्द्रवास्थ्य प्राप्त प्रशास १० वाग व न्या स्वर्ण कर वागाव स्थाप प्रश्ने कादिकों में होड़ देवे जो मनुष्य मगवान्की प्रीतिके लिये जो भरवा जान्यक म अप ५७ जन प्राप्त काराव्यक स्थापन स्थापन स्थापन सा सन्द्र बाह्य सोवता है २८ वह फिर ब्राह्मस को देकर बतके व्यक्तमें चन्न चन्न वादणा ६ ९८ वर १४८ मध्य मध्य चन्न मध्य अस्ति। तिसका भोजन करे बालिक के ययोक्त प्रत वरनेवाले समुख्य को स तिसख्य भाजन बर बारिक क प्रयाक्त मत करनेवाओ मनुष्य की पृट देखकर पमराज के दूत इस प्रधार माराजाते हैं जैसे सिंह को देख कर द्वारी भागजाते हैं विश्वाओं का जन ओड़ों तिसके समाग सेटड़ों यहानहीं हैं ३ = प्रमा करके स्पर्धकों जाजाते और ब्यूसिकस्य मन करने पहानहां दं २ = यहां च्यतः स्थाना जातवः भार श्रीसक्या प्रत करने माता बेंदुरुठ को जाता है जो मन, कर्या, वेह च्योर क्येस अरस जो कुछ पार होता है २ ९ वह स्वार्थक के प्रत क्रमेवाओं को है ? कहरू स्वामाध में क्या की प्राप्त होजाता है युवोक बत क्रनेवाल प्रभाग प्रभाव के बात व्यवस्थ व क्याल के प्रभाव के स्थान के कृतिक के मन करनेहारे की युवसको चारमुख के मझाता भी कहने में समर्थ नहीं हैं जिसको इसके सब पाप दशी दिशाओं को भाग म समय नदा है। असका तरक सब पाय दशा दशाओं का नगी। जाते हैं २२१२२ और यह कहते हैं कि शासिक के बन करना के इस्से हम नहीं जातें और कहां ठाउं है जाहका | योगियासी में कुश्रासी जात पश्चारिक २१ औहिस्ती की जीते के लिये ब्राह्मण - नार्याः प्राप्तः प्रदेशः स्टब्स्याः स्टब्स्यः स्टब्स् मीत व्यादिकों से शतिमें जागरण करे जो मनुष्य महिमे इसकी -तः कार्यम् स्वरत्या कारात् वर्षः वर्षः वर् समस्य है तिसके पाप नाश होत्राते हैं ३५ ॥ र्शते श्रीपान्ने वहारुगये इ^{ल्ड्डी}शकसंपादे महत्त्वको एकरिंगो : लादः २१ ॥

ग्रीनक धोले (के हे सब जाननेवाले सुतनी ! सब प्राधियों के कल्यात के लिये क्षम करके तुलसीनी का सुननेवाली के पाप नारा करनेवाला मारास्प्य कहिये ! तब सुननी बोले कि हे शीनक, जा-करनवाला भारतस्य कार्य ३ तत्र तृतका बाल क दरानक, मा-झक ! जिसके परिसर में तलसीजी का वन रिवत होता है उस रूप । श्वरूप श्रीम से यमराज के वृत नहीं खाते हैं २ तुस्तीजी बर वन सब पापों का माश करनेवाला चौर शुम है जे श्रीष्ठ मनुष्प लगाते हैं ते बनस्त्रजा को नहीं देखते हैं 3 है उत्तन प्राह्मण ! जो तुससी जी को समाता, पासता, संबा, दर्शन चाँर स्पर्शन करताहै तिसके सब पाप नाश होजाते हैं ४ जे महाशब कोमल तुससीदती के प्रतिजी को पाजन करते हैं वे कालफे स्थान को नहीं जाते हैं ४ मेगा ब्यादिक श्रेष्ट मदियां विष्णु, मह्या ब्योर महादेव, देव, तीरथे पुण्करादिक सब गुजसीदल में स्थित होते हैं ६ जो पापी नुसरी-दर्शों से युद्ध होकर प्राची को तोदता है वह विष्णुजी के स्थान को जाता है यह मैंने सत्यही कहा है ७ तुलसी की मिडीसे लिस सेकड़ों पापों से युक्त भी मनुष्य प्राचों को जा डोड़ता है कह भगवान के मन्दिर को जाता है = जो मनुष्य तुलसी की लकड़ी का चन्दन धारच करता है तो उसके थेन में पाप नहीं स्पर्श करताहै और वह परमपद को प्राप्त होता है ६ जो अपनित्र चौर चाचार हीन भी म-मुख्य महिले तुलसी की लकरी की माला को करठ में धारण करता हैं यह हरिजों के स्थान को जाता है ३० व्यक्ति के पता की माला भीर तुससी के काष्ट्रसे उत्पन्न माला जिसकी देह में दिशकाई देती हे वहीं निरंपय मागवत मनुष्य है ११ जो विष्णुजी की जुंदी, तु-लसीइलसे उत्पन्न माना को बगठ में घारण करता है वह विशेषकर देवताओं के नमस्कार करने के योग्य होता है १२ तो फिर तुलसी की माला को करठ में कर जनार्दनजीको पूजन करता है यह प्रत्येक पुष्प चढाने में दशहजार गीवों की पुरुष को प्राप्त होता है १३ जे क्रमान्त्र १६ ५००० क प्रकार च उत्पन्न स क्रिमे भगवान में चहावर घारच वरता है किसे भावकन में चहाकर घारण करता है तिसके तिरक्य पाय नहीं होताई १७ प्रमानके वह तुल्तां को अकती थे माज हो देखकर दर्श से हसकरम करा होता है जेता पत्रमें तुल्तांके देखकर दर्श से इसकरम करा होता है जेता पत्रमें तुल्तांके देख माण होजातेंहें १० है उत्तम आज़्य । ओ दशम मनुष्य दुल्ताों के कुम्में ब्योक्ट्र के हुक्की हालाम्या में दिगढ देताहैं तिसके तुल्लाों के कुम्में ब्योक्ट्र के हुक्की हालाम्या में दिगढ देताहैं तिसके कता ५ वनम् आक्त क दलस्य शत्यान्य मापन्य दताह ततस्य इस मुक्तिको आस होताते हैं १६ जो ब्यांच्लो के पलको दाय. प्पत्तर सुक्रका प्राप्त हासात ह १६ जा ध्यापत के पताका हाय, मरतक, गता, दोगों काग भीर मुख में काग्य फरता है वा हवार भगवानहीं जानने योज्य है २० जो आंको के कर्तों से श्रीनायान, को पुत्रताह तिस्तर्थ एक बार पुत्रास करोड़ जानी के हकड़े किये को पुत्रापति तेलाली पण कर पुत्रापति प्रश्ना कर अभिनाति । हर पत्रापति करिताली पत्रापति वर्षा स्थानिक प्रश्ना करिताली हें वह एक समय में स्नानकर तुन्तसीओं को जल देकर प्रर पना राया २= यह तेजसे जादित्व नाम और पुरुषसे सम्पेतीको नाई शक्ष २८ वह तजस जावरच नाम जार पुरुषत सुन्तराज्ञ जाहर था तम कोई बहुत पार्थी भक्षण करनेवाला प्याससे व्याकुत होकर कावा २८ तय यह तृतसी की जड़से जल धीकर पापरहित हो-गया फिर व्यक्तियं नाम बहेलिया शीवता से जाना ३० और असमे बोला कि व्यक्त और जलको मोजन कर क्या तनावा होगया है किर उस प्राश्तरहित को बहोकिया तादना करता भया नव क मराजके इत यमरागर्का व्याजाते क्षेत्रपुक होकर पॅसरी कौर मु-इर हाथमें लेकर उसके लेले के लिये प्राप्त होगये ३९ । ३२ स्वीर इसको बांधकर जब लेजाने का मन बरते भये तब विष्याजी । ताम क्षेत्रके जान चलाय का मय करते क्षय तक अध्युत्ती हैं हुए प्राप्त होनके जीर चमने की फुँतरी को काटकर स्थमें क्रियको हुत प्राप्त हामच आर चंधन का कराय का उक्का राज्य प्राप्त १३ ग्रीप्रही चुत्रा क्षेत्र मंथे तब नचतासुक निकर चमराजके दूत नगावान के दूतों से चूक्ते मंथे कि हे सरवातों ! क्षित पुषय से हस को व्यापकोंग क्षिये जातेहाँ १५ तब नगयानुके दूत उन्हेंसे बोले कि यह पूर्वसमध्या राजाहे इसने व्यक्षिक पुरुष किया था किसी संदर्श यह पुर्वतमञ्ज्ञा राजाह करान ज्यापक हुन श्रीको हर लिया था ३५ हमी पापसे राजा मरकर यमराज के स्थानमें प्राप्त हुन्या तर्हापर तुम लोगों ने निरुष्य यमराजकी माजासे इसको क्रेश विथे थे ३६ तासमधी स्वीके साथ तस लोडे बी गानास बराज कराज कराज व्यास स्थाप कोर बहुत व्यक्ते कम्में से गुरुवा में सोवट वह कीवा करता भया कोर बहुत व्यक्ते कम्में से व्यानुक होता पर ३७ व्योर यमराज की पाता से तपे हुए लोहे के लग्मेडो जालिंगनकर स्थित होताभया इस प्रकार राजा बहुत कास करन को भोगानर ३० वामराज के स्थानमें क्येंग स्वारी जान की जानाओं से सीना जानत किर सरक्षत्रेय में दर्भवार कावकीक ३८ जन्म पावत प्रयूने कर्म्म से बहुत कालतक दुःस भीनगरता रहा अप तलसी की जब के जलको पीकर हरिजी के स्थानको नाता है 😮 उस समय में दिष्युदर्श के वे वचन मुनकर वमराज के दूत जैसे व्याचे ये येसेडी चलेगये तब विज्जुजी के दूत शिसके साथ वेबूगठ रचान को गये २३ हे बहाव! हे मुने! हे शॉनक! तुजसी

जेका पाप नाश करनेवाला माहारूप तमसे वहा से मन्द्र्य भक्ति

मुखं बहुतनाइ।
से संस करते हैं ते साँची तमको उनको कमा पान होता है पूर ।।
श्री बंधान अपनो अपनो क्याने हमाने कमा पान होता है पूर ।।
श्री बंधान अपनो अपनो हमाने हमाने

कराई। मान का नाम कर का नाम के साम की साम की

कों से समा स्वावाह विस ताजू सामय को मारावा कर सर्वे कर क्या नहीं देते हैं . को देते के ताजा के सारत करते स्वेच करा हिमारी पूचा मिलाने करने से सामी मारावा नहीं हैं । एक्सपित क्षेत्र एक्सपी में मारावा की एकन कर व्यक्ती कर सर मोजर आकरने मेक्स व्यक्ता में हैं । है कि सा वर्षका का सर मोजर आकरने मेक्स व्यक्ता कर है । है कि सा वर्षका का सार हो में मेक्स मोजून वो क्योरही में हुआते थीं प्यार्टिश में इंटिको मोजर के १ १ पिट पाया हो है के कि पार्टिश है पार्टिको मोजर के १ १ पिट पाया हो है के कि पार्टिक ही पानदर पांची दिन तालहर विभिन्न मारावा में पूता कर प्रशासन माथा। अध्यक्षित स्वाता के अधिकार देविकार स्वितार के अधिकार देविकार स्वितार के स्वतार देविकार स्वितार के स्वतार के प्रशासक स्वातार के स्वतार के स्वत जानक सरका अपन करण्या, उपन कारा क जानक परावादा। महिरा पीनेहारा, सहैव पराई निन्दा करनेवाला, १६ दिरवासचात रावन तराज करवाहर क्या के कर कर कर में जाता जा तब इस चोरों हो बूळ खाने हो न मिलनेलमा तो सब भूख से ब्याबुळा ब्योर स्थान को चले गये २४ वहां पर प्रतिष्ट होफर वे सब चार बहुत से पुरवकारी श्रेष्ठ वेट्यन बाह्मणों को व्यावलेकी जड़के पास विश्वत देखकर २५. उन सक्के बीचसे दण्डकर चौर तिन पुरुषा-स्थत दुसकर १५ ज संबंध बाध्य से इंग्डिक्ट पार वित्र पुरुधा-क्षाच्ये के पास जाकर मोशा २६ कि के श्रेष्ठ जाहायों। में भूस से वीड़ित हूं मेरे ग्राव निरम्बन निकलने वाले में इससे व्याप लोगों को इसमा में मात हुं कुल लाने के लिये वीशिये २० दरकबर के दक्स सुनकर वैधर्म में तलद उससे बोले कि सब पाप दरनेवाले, प्रसिद, विष्णुपंत्रक २८ भगवान् के दिनमें बेसे तेरी व्यक्त लाने की वास्ता हुई है विशेष कर शहिये इस समय में तेरी क्या संझा हुई है २१ हुद् ६ (१५८) च्या प्रत्य वर्ग प्रत्य वर्ग प्रत्य का प्रत्य हुद् । अन्य आज्ञान से दशक्त उनसे बोला कि में दशक्त नाम जाउस सब पापों से गुरुष्ट्रं मेरा उत्तार पेसे होगा ३० तब वे ब्राह्मण बीसे कि तुम ओप्रमत विष्णुपक्ष को को तब दशकर अप्राणे की काला से विष्णुपंत्रक मतको करतेगये ३९ फिर जब मरे तो जन्म से श्रीत होसर श्रेष्ठ रचपर चन्नुकर श्रीमणवान के स्थान में जा-कर अग्रजनहीं के संपंक्षे जास होतेमचे ३२ जो सन्वय इस पाप माश करनेवासे परित्र को भक्तिसे सनता है तिसके दरोद जन्म के गारा करणवाण वारत का गातला पुनता वाव किसी क्षतासे साश होजाते हैं ३३ ॥

इति स्रोताचे पहास्ताचे नस्तान्ते सन्त्राीनकर्मको विवाधंत्रसमाद्यान्त्रं नाम अयोगिकी;ज्यायः ६३ ॥ चीवीसवां ऋध्याय

शोमक बोले कि दे विद्यानों में श्रेष्ठ, तत्वीके जाननेवाले, हे महा-वृक्षिमान । हे नुने, सुननी । इसमयन में मुन्ती शनीं महास्पदी क्षमसे रुद्रिय 3 तब सुननी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ, शीनक । ए-वी का बान वर्ती में उत्तम कराई जिसने किरचय यह दान हिया है बह सब दानोंके पतको पाताहै २ तो ब्राह्मपछो क्षप्रसमेत एथी वेलाई वह विष्णुलोकमें जबतक चौदरों इन्द्र रहते हैं तदशक सख भीग करताहे व किर एव्यों में जन्म पास्त्र सब एव्योका शजा ही-कर बहुत कालतक सब एव्यों को मोगकर श्रीभगवान के घर को अतार्थ ५ तो शहायको गोषमंमात्र एत्योचे देताहै वह सब प्रपास ज्यान्य ह जा ज्यान रक्षित होच्छ मगवान्ये स्थानं की जाताहै ए अद्योपर सी गीर्व प्योर एक वैस्त ध्यवंत्रित होकर स्थित होजाते हैं तिस ग्रिको महर्षितीय गोधर्मभात्रा कहते हैं है एप्पीकर क्षेत्रेता थोर देनेवाता होना स्वमंत्रो जाते हैं तिससे पुरिमान ब्राह्मण सेक्ट्रो वान डोएकर मी पुरुषी महत्त करें ७ जो ब्याजनी जनमन विमोर्गत होका पुरुष्ट की

देताहै वह सब पापोसे उटकर महावेदजीके लोकको जाताहै १४ जो तित्वके प्रमाण भी सोना बाह्मण को देताहै वह करोड कर्तासे भी मक होकर भगवान के स्थान को जाताहै १५ जो साधु बाह्मच को चुंबी देताहै वह चन्द्रलोकमें प्राप्त होकर सदेव व्यक्त पीताहै १६ को मूंगा, मोती, हीरा चौर मखिका देताहै वह स्वर्गलोकको जाला है 10 तुलापुरुर के दानसे जो पुरुष मनुश्वको प्राप्त होताहै ति-ससे करोड़ गया शालपामको मृति देनेस मिलताहै १८ पर्यंत, यन क्योर काननों समेत सातों होय की प्रध्यों देने से जो पुरुष होता है तिसको शालधान को मार्त देनेयाला निश्चय आस होताहै १६ जो निरुषय शासपामको मृति को बाह्यक्यको बेताहै तिसने चौनहाँ मुबन दे डाले हैं २० जो तुलापुरुष का दान करताहै तिसका माता के पेटमें किर जन्म नहीं डोलाहै २९ जो मनुष्य गहनों समेत कम्पा को देताहै वह झहरकान को जाताहै और फिर जन्म नहीं होताहै २२ क्या वेंचनेवाले की फिर तकसे निरुक्ति नहीं होती है और कुरुवदान करनेवाले का फिर स्वर्ग से जानमन नहीं होता है २३ को जना और जनुरी जाहाय को देताहै वह मरकर इन्द्रपुर में जा-कर चार कल्पपर्यन्त बसता हैं २४ हे उत्तम, बह्मप ! जो साधु ब्राह्मणको कपने देताहै वह स्वर्ग में सुन्दर वस्त्र धारणका बहुत बाल श्थित होताहै २५ जो पुरानी गळ, जरित बग्रदा और नवीन राजे।

	चतुर्ये ब्रह्मसगढ ।	દ્
वर्ता कन्या देताहै वह	नरकको जाताई २६ सुन्दि देखे जो बद्धानसे देख ने	मान् सनुष्य बस्या
	को भोजन करताहै २८.१ प्यामी के स्थान में जाक	
	कुलास विनायत राज्यादान में में सारक्ष्य राज्यादान कर बहुत समयतक राज्य	
वह ब्रह्मस्यान म ज	स सब पायों से शहत हो स	कर प्रकाशित दीवणी
मनुष्य पान वेतरहें	वह सब एखाका संवर्	के मानकी ३४ तो
व्यताबा वा का	में केंद्र विचादानको करत	त है वह मस्कर विव्यु
जी के समीप तीन	मे अष्ठ विद्यादानका करत् हो युगपार्थम्स रिपत् ह ह श्रीमगवानुकी कृपासे है	तिहें ३५ सद्दन्तर
दुर्शम झ्लिको पाक	र आभगवान्का कुमल इ मनुष्य वानाथ स्मोर हुन	लयक जाज्ञया को पड़ा
हे ३७ जो मन्द्य	भक्ति और श्रवा से पूरू	होकर पुस्तक देता है
तह प्रस्पेक व्यक्तर	में ब्राइ कार्यशा गळ क	dieta actes and a
श्रास होता है ३०	: शहद ध्योर गुरुका दः हाँदै नमकता देनेवाला वर	हम के लोकको जाता है
३४ सम्बद्धे जानने	हाँद्र समस्त्रा देनवाला वर वाले सब मनुष्यीने श्वल 	व्योग जसको सब दाना — केल जन्म बीच पान
में श्रीत बहाद है।	E SIGNATURE SING S	क्याचा नेत्रेयाचा मनप्प
को दियाँहै तिसन सरका जैनेताला	कहाता है तिससे अम्रह	त देनेपाला सुब दानीह
प्राणको प्राप्त होत	कहाता है।तसस अपन हुँ १२ जसे अन्त है ते	इंडी जल भी है यहान

वसंबद्धा कहुए हैं जान के प्रना पन्न स्तर्य गाँउ जाता है है पूर्व खोर त्यास ये दोनों वस्त्र कहीं महे हैं इससे पन्न भीर नास की बुदेशामों ने केंग्र कहा है ४४ ने उत्तम न्यूब्य एप्यों में प्रमदान केंग्रेट हैं के महापूर्व में सहस्तर मगवान के मन्दिरको जाते हैं ४५ भो तक्सवी ब्राह्मण ! एप्थी में नितने प्यक्तेंश्रे हेता है तितनीही ब्र-हत्या नाश दोतानी हैं ३६ हे शीनक ! व्यक्तके दानों के देनेना ल ब्रोहरूपा मारा दाताता है देव व राजका : ब्रोह मेमेनामों की तेहीं को पाप डोटकर शीप्रही भागजाते हैं 29 इससे पापिकों के पत्रों की पुनिमान नहीं प्रकल करते हैं और जे मूर्ल मेहसे बहुत करलेले हैं वे पाप के मानी होते हैं प्रकार करते हैं ल महरूत प्रदेश करलत है. व पाप के भागा हात है. इस जो एक सको भूगि में स्थित करदेता है वह सब पापों से इंटरर भगवान मन्दिरको जाताह ५८ हे श्रेष्ठबादाय ! यससे धनका संचय करतः योग्य है और इस्डे हुए भनको दानके कम में लगाना चाडिये ४० त्रे क्षपणनासे धनका सहीं दान करने हैं ते व्यत्यन्त दान्सी डोकर प्रकाम सब धन हो बकर इट्यरहित चरोजाते हैं ५ १ मनुष्यकोक में जे मनुष्य सदेव दान दे देकर दरिया हो जाते हैं तो वे दरिया नहीं ज्ञानने योज्यहें महेश्वर वे हैं ५२ साबु संयम से बर्जित. डया की

वधवरता भाषा । वरही कडेहर हैं जल के चिना चल सिख नहीं होताहै १३ मध

बण्डुहीन परशोश में नहीं दिया हुत्या नहीं स्थित होता है ५३ जी बन्धुदान परकार में नहीं दिया हुन्या नहीं एत्यत दोता दे उद्दे जा मनस्य धनके स्थित होने में नहीं लाता चीर न दानहीं देताहै वह दरिद्रको नाई जानने योग्य है मरकर वि:स्वास को छोउता है ५५ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण | तस्वके देखनेवालों ने तपस्थासे भी दानको श्रेष हराहै इससे पक्षमें डानवर्मको वर्रे ५५ जो दाता हाहाराको उ नहीं देताहै वह सब प्राप्तियों के भय देनेवाने पोरनरक को जाताहै

मांगे तो इन दोनों का जनतक चन्द्रमा चौर सुर्य रहते हैं तदतक मरक में बास होशाहै ५७ मीर बहाहत्या मारिक जितने निश्चय पार होने हैं वे दानसे नाग होजाने निस्मये दासको करे १० ॥

इति भीगादेशसम्पराधेमसम्बद्धानसभीनकसंबद्धेवनविद्यातिनसोऽध्यादः १५ ॥

चनुर्व ब्रह्मसन्द । पचीसवां खध्याय प्रमुख बांचनेवाले के प्रतनकादिका पता वर्णता। जीवक कोले कि हे सतती ! सहमीजी का पर, विज्युजीका च-रिप्र सब उपल्यों का नाश करनेवाला, तप्रकारों का निवारण करने-हामा. ९ विष्णाजी की समीधना टेनेवाला चीर धर्मा धर्मा करते. ध्योर मोशके फल का देनेहाराई जो मनुष्य महिले सनता है वह च्यान में भगवान के स्थानको पाल होताहै ने लावने जनावा क माहास्य मेंने बड़ा प्रजूत सुनाहै जिसने उद्यारणही माद्रसे सनुन्य परमपद को जात होताहै 3 तिस नाम के बीरोनकी विधि को इस समय में बहिये तब सतर्जा बोले कि मोश्रेड साधन वस्तेवाले सं-बाउको कहनाएं हे शीनक ! निसको समिये 🔉 पर्शसमयमें एक साय यसनाजी के किनारे बेठेहुए, शान्तसनवाले सनल्झार जी से हाथ जाइबर मारदजी पृंहतंत्रये कि बनेह प्रकार है। मंग्यति-वर भर्मी को सुनकर प्र.। ६ जो इस भर्मच्यतिकर को नगवान ने मनव्यों को कहाई हे मगवानके प्यारे ! तिसका नाश केंसे होता है सो बहिये ७ तथ सनाकुमारजी कोले कि हे गोविण्दर्जा के प्यारे च्यार मगवानके धर्म्म के जाननेवाले नारदर्शी ! तुमने तमसे पर. मनवर्षीकी महिल्हा कारण जो पंजा है तिसको सनिये = हेब्राह्मया। जे सब ब्याचार से वर्जित, मुर्लकृति, वाल्य, संसार के जनलेटाने, दुंन, आहंकार, पान और चुनुजों में परायस, पापी, निप्तर ह और के बन, श्री कौर पत्रमें निस्त होते हैं वे सब काल होते हैं भगवान के चरवाकमसों की शरण में जाने से शब होजाते हैं ५० है उपाकी सानि! तिस देवों के करनेवारों, स्थावर और जंगमको मुक्ति करने-हारे, श्रेष्ठ परमेश्वरको अपराध में परापण नतुः व्यतिगमण करते हैं तितके निरूपय गामीके कहताई ११ सब व्यवसाधका करनेवाला हैं तिनके निरूपय गामांश करताहू ४७ सन व्यवस्थान १००००० भी भगवानके व्याध्य होनेसे इंटबाताहै जो मनुष्यों में देखी मनुष्य भा मनवानुक जाजन वात्रत वृत्यात्व कर जो कमी नामके वा वाद होताहै हो जामसेडी तरवाता है एउंचे मित्र नामों के खपराध ने अपन्याप्त करिया है 32 तम जारहारी केने कि दे बेहा सहस्य! अग-स्वयंत्र सावक होन ध्याया करियानों हैं जीकि महत्यांची हुएवा के साव पहरते हैं की अपहास करियानों हैं जीकि महत्यांची हुएवा के साव पहरते हैं की अपहास की साव करिया है है 32 तम की अग्ना पहरते से से कि है तमार [समनी की निन्दा बनता नामों है तमें अपहास निव्या को की करिया है जान मानी होने तो अपही निव्या को की करियों है जुन अग्नीरिय्यानों के गुरू आते पर जाम स्वाधी है भी जो इस लोकों है विश्व और कार्या कार्या कार्या करिया करिया है जो इस लोकों होत्री कि जो है जाना है का विजय समावत के सामी कर ब्रोवेद करियों करिया है 19 प्रकृती

ं करायां में से जानकर भी सहस्वतं नहीं जोदारी है है मालाई में ती स्वादेश हैं में स्वादेश हैं में ते सुत्ये हैं को भी तो है के हो में ते कुत हो भी तो है कहे हो माता हो कि है है । है नजर जिल्दरां अपरास्त्र के प्रकार में माता हो कि है । है नजर जिल्दरां अपरास्त्र है कि हा सुत्र के निवास है नो माता है के हो हो नहीं माता है ने अपरास्त्र है के हैं है स्वादेश माता है ने स्वादेश है के स्वादेश है के स्वादेश है के स्वादेश है ने स्वादेश है के स्वादेश है स्वादेश है के स्वादेश है स्वादेश है स्वादेश है स्वादेश है के स्वादेश है से स्वादेश है स्वादेश है स्वादेश है से से स्वादेश है से स्वादेश

दों राह में प्राप्तवाकाओं केमलमें प्राप्त, शब वा व्यवद व्यवस्यान

चनार्व बागासार । स्मानित से तीन हो तो सत्पद्यी तार देताहै वह पनि देह हस्य से उत्पन्न लोभ और पासपार के माण्यमें निश्चित हो तो शीवडी फलको उत्स्व नहीं करता है २५ हे नारव ! यह प्रस्तादस्य सब यहां है उत्त्वन नहीं करता है देश है नावजू । यह परपहरूप, सह चाजूमें यो नाग इस्तेवाली व्यवे च्याजा के लियारण करने इस्तो है दूर्व समय इसके मैंने महादेवनी से सुन्त हैं देश जे विश्वय च्यादात में परायण भी मनुष्य हैं व्योव विष्णुती के नामोंके जातरी हैं जिन वर्ष यह नीतमें कुछि होजाती हैं देह है मानके देनेवाले ! नामों का सब माइसरम पुराल में चूहायदा है निससे सब पुराल के सुनानेके मेरव हो २७ हे भाई ! जिसकी प्रतिदिन ' ः ं सने में अहा भाग के १९० है गाँ। शिक्तक शेतादन हैं जा तुन में अब्री होती हैं तिसके द्वरण व्यन्तामिक सार्श्य देए प्राप्त दिण्यात्री प्रस्त होते हैं २= पुण्यश्मीयं, प्रयान और सिज्युक्ते संगमने रंगान करने से को कल होताह सिल्युक्त द्वाराज्य अवश्चात्र का होताह रूप के प्राप्त का स्वाप्त होताह रूप के प्रयान के दिल्युक्त स्वाप्त का स्वाप्त के दिल्युक्त स्वाप्त का स्वाप्त के स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त के स्वाप्त का स्वाप्त के प्रपेक्ष क्यार में करिया गठन दोनका क्रम प्राप्त शाहर प्रश्नित पूर्वति पूर्वति में करते हैं एक बेटना प्राप्त हैं एका में उनका प्रमुचित पूर्वति हैं प्रश्न हैं एका है । इस है । एका प्रमुचना में केश्वे प्राप्त हैं है । ते तुपाणींके पूर्वति हैं में कियम करीन वानोंके इंदर्ज किये हैं है । ते तुपाणींके प्रमुचने हैं में कियम करीन वानोंके हैं इस्ते किये हैं एका एका हैं में कार्यता नामाय है । कियानों कार्यता है । एका है । इस हो निक्र कार्यता है । इस होने हैं । इस हो निक्र कार्यता है । इस हो निक्र क भार भारतपुरा होश्नर करित क बाहुए सान, तत के क मन्द्र, नहीं के सुरहत, तत के क मन्द्र, करों के सुरहत, तीनों की बाहुँ हो हुई हो, बुट जातन को रहा है। के सुरहत है। के सुरहत है। करों के सान है। के सुरहत के सुरहत है। के

इति भीराधिमहारारोऽश्रास्त्ररोगराधीन्यानंशरोगर्थिशानिकारेऽस्तरः २५.११

पदायराना भाषा । छव्वीसवां श्रध्याय इतिस के पासने के फल और न पासने के दोशों का दर्शन ॥ भीतराजी कोले कि हे विस्मान समग्री ! प्रतिकार के प्रकर्त : क्या पन्त होताहै व्यार प्रतिहाल सारहने में क्या पाप होताहै क्षिसके में युक्त को इच्छा करताहूँ कहिये 3 हे क्ष्मक समुद्र, मुनिजी। मूं माराक्ष्में क्यार सरस्य सीमन्त्र में क्या होताहै दक्षिण दक्षिणों देख प्र कृष्टिये २ तम सत्तर्जा योन्हे कि हे मानिशाईन, होज्य

0.0

कुरावदः राजस्य र तथ सुतानां बालां कि है मुक्तगाहुन्। राजन्क चेन्यदर्शे में तुम श्रेष्ठ स्वीर सब मनुष्यों के हितामें रत हो इससे मूलर रहताहूँ कृतिय ३ मनुष्य सी गांवांची वेचर जो चल जोता करता ितत्ते करोड़ गुख्य प्रतिकाले पालनमें बाताहें ४ अतिहासे रूपाव से मुर्लु होर नरफ को जाता है ज्योर, सी मन्युजर तथ निरसानो प्रधाति प्र तवनन्तर प्रथ्वी में वरिज्ञी के घर में जन्म पाकर का चौर कपारों से डीन डोकर व्यपने कर्मसे क्षेत्र पाताई ह सस्य में भ देवता. प्राप्ति क्योर गरुजीके समीप सीमन्ड न करे क्योंकि तबता विध्याओं भी देशको जलाताई क्षेत्र लग नहीं होता है ७ हे झाझप भंड सीमग्द में में इस समय में क्या कई सी मन्वंतरपर्यन्त इसी मरवा में रहता है = हे मुनिश्रेष्ठ ! सत्व सीमन्द से श्रीमगपात् मरव म रहता ६ = व मुल्लाक्षछ : लाज सामान्य क जनगणका. निर्माहन को स्वर्श करने से सास पुरुषों को लेकर नरक में बहुा ए.जटा पणता है e. कदाचित जन्म पाता है तो प्रत्येक जन्म

कोडी होताई सत्पक्षी सीमन्द से ऐसा होटाई व्यव भेठ सीमन में में बचा निरुवय कहे १० जो सन्प्य दहिनाहाथ देकर तिसब , प्रतिपाल करताहै तिसकी प्राप्ति कृष्णाओ होते हैं यह में सत्प्रश्नी सर सहसाई ५ ५ जो मनस्य हाथ देश्य वचनका प्रतिपालन अवत्य मह एरलाई तबतक पितर वातना को प्राप्त होते हैं ५२ और जाप म नस्टर निस्सन्देड करोज परुषों समेत पोर नस्क को जाताहै १ तव शीनक बोधे कि हे स्तमुनि ! पूर्व समय में फिलको दहिने हर के प्रतिपालन से कप्पानी की प्राप्ति हुई है तिसको काप वहिये यादरसमेत सम्मा घटनाई १५ तब सन्त्री बोले कि हे शैंगफ

चतुर्ष ब्रह्मसन्द । ७३ पुर्वसमय में विश्वी पुर में वैश्विकम नाम शृह हुना है यह बहुत
भोजन बरने कला. मोटे श्रीम वाला. वजन बोलनेहारा. श्रयपन
सुन्दर, १५ धनवान, पुत्रवान, सुन्य, विद्यान, सब जनोंको प्यारा,
साह्यश ब्रोह प्यतिथियों को सदेव पूजन करने वाला, ५६ पिता का मक्र, सदेव प्रतिका का पालन करने वाला, गुरुजर्मी की वा-
का मक्त, सदय आतक्षा का पालन करने वाला, गुटजना का वा- लियों का पालने बाला और आंभगवान की सेवा करनेदारा था
९/० एक समय में जवान, विस्मान, चारवाल सन्दर आग्रस का
क्रद क्रवर से चारण वर प्राप्त दोकर उससे बोला 9c कि हे शीर ।
मेरे बचन को सुनिये मेरी उत्हरू करने वाली सी इस समय
में सर गई हैं में बचा करूं कहां जा उंदस समय में मुभाते हुया करके पहिये १८ जो मनुष्य विशेष कर प्राध्नय के विवाह को
करका काह्य ५० जा गर्नुत्य १४१४ कर आक्रम के विवाह का करता है उस को दान, तीये, यहा चीर करोड़ों वर करने की कुछ
ध्याद्वारपकता सहीं है २० ये जाराण के वचन सनवर वीरविकेम
अक्टरे बोला कि हे यहान ! सेरे क्चन को समिपे सेरे बाला करवा
है २९ जो इच्छा तम्हारी हो तो मैं विधिपर्वत उंगा मेरे दक्षिने हाथ
को छहरा प्रीतियों में इंगा ब्लॉर तरह ने कहना २२ तिसके वे बचन सनकर माझणकप चारताल जनगण्डल दोकर दक्षिने दाप
बनन सुनकर प्राप्ताचकप चारताल कारणपुर बन्धर पाइन हाप को प्रकारण चारते केला २२ कि पाप प्रश्लेक मध्यों कारणपुर
को प्रहराकर उससे बोला २३ कि गुण मुहुलंकर मुभावो करपाय- चूक कम्पाको दीतिये वर्षीति विजन्म में बहुत विज्ञ होते हैं यह
शास्त्रों में निश्चय है २५ तब धेरविकम बोले कि हे ब्रह्मन् ! तमको
प्राप्त करता है न्या भूठ न होना ज्वार उत्त दक्षिना हाथ देकर महीं करता है न्या सूतजी बोले कि हे गोनस्मृति हे आहारा ! तम
नहीं करता है रिप्र स्ताजी बोलं कि है गोनक्सुनि ! हे जाह्मस ! तब
चैरविक्रम कृष्णशर्मा काहाण पुरोतित को बुलाकर सब इसान्त चंद्रेल मया २६ तव कृष्णशर्माकोले 6 केने जाहाराको कन्या देनेकी
क्टल मया र्व तब क्रुप्त वनावाल क्रुप्त आक्रायक क्रुप्त वनक इच्छा श्रम्ता है विना जानेष्ठ्रण अकुलीनको विशेष कर न रिपिय
२.५ फिर असके फिला ब्याटिक सन जाति वाले बोले कि हे वीरि हम
पन्न । हमलोगों के वचन शनिये २० जिसका कर, देश, गोप्र. त
शोल बीर यवस्था नहीं जानी जाती है उसको भाईलोर ाया
नहीं देते हैं २८ तब वीरविक्रम केला कि मैंने दक्षिता हाण ाया

७२ क्यापुरास भाषा । है कटाबित बान्यया करने में सर्वणा नहीं समर्थ है ३ = यह तिम से कडकर ब्राह्मणको कन्या देने का प्रारम्भ करताभया यह देखकर स्त कहकर प्राप्ताचना करता वृत्त का भारत चरतात्त्व पर दूसकर स्ता अभिनाते स्वयंत विस्ताय को प्राप्त शेलेक्यों ३ ९ विसक्ते सन्य सब जातवास चन्नुत । तस्यच का गात काराच्य व । तात्तक सस्य सब्बा सम्बद्ध श्रीमा चक्र कीर गताको धारचक्त मगवान शीवारी वर्षन सुरुपर शास, पंच चार गांदुका चारचार गांद्वाचा शासका तारहण चारकर प्रशास होका तारसे बोले ३२ कि तेरे कन धर्म माना विभा वचन वहिनाहाच, कर्म और जन्म धन्यहें तेरे समान नाता, एका, ५ वन, पारणवाल्य, पन लाट जन्म सेन्यह तर समान सीमीलीक में कोई जीर नहीं है हे साथी ! इस प्रकार के कमेरे तुने बुखका उदार कियाहे ३३१३४ हुटटी बोले कि हे शीनक !इसफे-कार श्रीक्रपाजी के प्रजेजी सोनेवा बना हत्या विमान मगयान के गरोंसे यह होकर प्राप्त होगया जिल में सब बोर गरुक्शजहीं थे

प्रशास कुत्र करूर प्राप्त हाराया ताला न श्रम च्या राजिलकाहाई थे सु तम प्राप्ताम हिला के सु कुत्र, जायाजा और पुरिश्चित को व्याप्त रिक्स सुरिश्चित को व्याप्त रिक्स सुरिश्चित को व्याप्त रिक्स सुरिश्चित को व्याप्त सुरिश्च के लिए के स्थापता वेश करें के को कहा के स्थापता वेश के स्थापत सुरिश्च के स्थापता वेश के स्थापता करता के स्थापता के योग्य नहीं होताहै चीन धर्म अस्ये तिएके घरको सोडकर चना जाताह ३६ जो महबाबि महन्य च्याच्य टेवर निराश करवेताह यह व्यपने वरीय पर्या से लेख तस्य से जाताई ५० जो वचनकी शंघन करता है तिसका राजा, परित और चोरों से धर्म लंबित हो जाताहै यह सत्पर्धा साथ निरुषय है ५९ इस स्वर्गोत्तर ब्रह्मस्वर को सनभर मनव्य इस लोध में जीवन्यक होताहै कीर परलोस में स्यामें ओक्षणाओं के उत्तम स्थान में जाताहै प्ररे॥

ति श्रीयत्ते महापूराचे आस्थाने मृतशीनकांचारे उद्यापकरेतानामाँगानाची निर्मात वेश्वपतिकारीमकास्थानाको व्यक्तिस्थानामोऽत्यायः १६ ह

इति स्वर्गोत्तरापरनामकं ब्रह्मसत्तवं सम्पूर्णम् ॥























































































































